चन्दामामा
नवम्बर १९७२

Photo by: MADAN GOPAL

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी

संचालक : 'चक्रपाणी'

इस महीने की बेताल कथा 'चोर का सम्मान' एक विचित्र वृत्तांत का परिचय देती है। राजा व्यापारियों के हाथों का खिलौना है। व्यापार व्यापारियों को धनी बना देता है। इससे जानता की गरिबी दूर नहीं होती। ऐसी हालत में वह राजा लुटेरे के साथ मैत्री का हाथ बढ़ाता है।

'अपराध का दण्ड' नामक कहानी में एक दूसरे किस्म के राजा का परिचय मिलता है। राज्य पाने की उसकी लालसा अपने भाई की हत्या करा देती है।

वर्ष : २५ नवम्बर १९७२ अंक : ५

सर्पा: पिबंति पवनम्, न च दुर्बला स्ते;
शुष्कै स्तृणैर्वनगजा बलिनो भवंति;
कंदै:फलै मुनिवरा: क्षपयंति कालम्;
संतोष एव पुरुषस्य परम् निधानम्।   ॥ १ ॥

[सर्प वायु को आहार बनाकर दुर्बल नहीं होते, जंगली हाथी घास खाकर भी मजबूत होते हैं, मुनि कंद, मूल और फल खाकर भी अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। इसलिए मनुष्य के लिए संतोष ही सबसे बड़ी चीज़ है।]

मंतु ष्यत्तुत्तम: स्तुत्वा,
धनेन महता धम:,
त्रसीदंति जपै र्देवा,
बलिभि र्भूत विग्रहा:।   ॥ २ ॥

[उत्तम व्यक्ति प्रशंसा पाकर संतोष करते हैं, नीच व्यक्ति धन पाकर खुश होते हैं। प्रार्थना से देवता प्रसन्न होते हैं, पर बलि देने से भूत खुश होते हैं।]

सर्वहिंसा निवृत्ता ये
नरा:, सर्व सहाश्च ये,
सर्व स्वाश्रय भूताश्च,
ते नरा: स्वर्गगामिन:।   ॥ ३ ॥

[जो लोग किसी भी प्रकार की हिंसा किये बिना सब विघ्न-बाधाओं का सहन करते हुए सबकी सहायता करते हैं, उन्हें स्वर्ग का सुख प्राप्त होता है।]

संतोष

बदला

ग्रीक देश में एक बूढ़ा अपनी पत्नी के साथ रहा करता था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा–"अरी, रुपयों की बड़ी जरूरत आ पड़ी है। तुम हाट में जाकर हमारी गाय को बेच आओ, मेरे पैर में मोच आया है।" गाय को हांकते बूढ़ी हाट की ओर चल पड़ी। तीन चोरों ने उसे सस्ते में खरीदने का एक उपाय सोचा।

उनमें से एक चोर जल्दी जल्दी खेतों के बीच से होकर बूढ़ी से जा मिला और पूछा–"नानी! तुम इस बकरी को बेचने जा रही हो? कितने में बेचोगी?"

"अरे बदमाश! तेरे आँख नहीं हैं? गाय को देखते हुए बकरी बताते हो?" बूढ़ी धुतकारते हुए बोली।

चोर ने कहा–"नानी, यह तो बकरी है, गाय नहीं! हाट तक जाती क्यों हो? मैं तीस सिक्के देता हूँ, मुझे बेच दो।"

बूढ़ी ने लाठी से चोर की पीठ पर एक मार जमा दी, और आगे बढ़ी।

थोड़ी देर बाद दूसरा चोर आ पहुँचा और पूछा–"नानी, कहाँ जा रही हो?"

"हाट में जा रही हूँ, बेटा! मेरे घरवाले ने इस बेच आने को कहा है।" बूढ़ी ने जवाब दिया।

"तब तो पच्चीस सिक्कों में मैं खरीद लेता हूँ, मुझे बेच दो।" चोर ने पूछा।

"अरे तेरा दिमाग खराब तो नहीं हो गया? ऐसी बढ़िया गाय को बकरी के दाम बेचने को कहता है।" बूढ़ी ने डांटा।

दूसरा चोर आश्चर्य का अभिनय करते बोला–"तुम्हें चालीसी आ गयी है! इसलिए बकरी को देख गाय समझती हो।"

"चाहे जो हो, मैं इस दाम पर नहीं बेचूँगी।" ये शब्द कहते बूढ़ी आगे बढ़ी, लेकिन उसका मन घबराने लगा। वह तो

राजनाथ शर्मा

गाय को लेकर चल पड़ी है, पर सब कोई उसे बकरी क्यों बताते हैं।

इस प्रकार सोचते वह और आगे बढ़ी। तब तीसरे चोर ने आकर पूछा–"फूफी, क्या तुम इस बकरी को बेचने जा रही हो? मैं इसे बीस सिक्के में खरीद लूंगा।"

"यह तो कोई जादू-सा मालूम होता है। मैं घर से गाय को लेकर चल पड़ी थी।" बूढ़ी ने कहा।

"फूफी! तुम्हें पित्त का विकार मालूम होता है। मेरे हाथ इसे बीस सिक्कों में बेच दो।" तीसरे चोर ने समझाया।

"अरे, एक ने तीस सिक्के देने की बात कही तो दूसरे ने पच्चीस सिक्के की, चाहे तो तुम तीस सिक्के देकर ले लो।" बूढ़ी ने खीझ कर कहा।

"फूफी! सच पूछा जाय तो इस बकरी का दाम तीस सिक्के न होगा। लेकिन तुम बूढ़ी हो, लो, ये तीस सिक्के।" तीसरे चोर ने कहा।

इस पर बूढ़ी ने अपनी गाय को बकरी के दाम बेचा और घर लौट कर सारी बातें अपने पति को समझाया। बूढ़े ने अनुमान लगाया कि पड़ोसी गाँव के युवकों ने ही गाय को हड़प लिया है, तब बोला–"जो हुआ, सो हुआ, पर अब जो होना है, मैं देख लूंगा।"

इसके बाद बूढ़ा जंगल में जाकर एक ही प्रकार के दो खरगोशों को पकड़ लाया। एक खरगोश को एक टोकरी में बंद किया और दूसरे खरगोश को दूसरी टोकरी में रख कर अपनी पत्नी से बोला–"अरी, मैं बाहर जा रहा हूँ। आज हमारे घर मेहमान आनेवाले हैं। तुम शहद की रोटियाँ, खीर और बतख का मांस तैयार कर रखो। घर लौटते ही मैं तुमसे पूछूँगा कि आज क्या रसोई बनायी है? तुम झट बोलो, खरगोश ने आकर जो बनाने को कहा, वही बनाया है।" इसके बाद बूढ़ा घर से चल पड़ा।

बूढ़ा जब पड़ोसी गाँव में पहुँचा तब तीनों चोर शराब पी रहे थे। उन लोगों ने

बूढ़े को देखते ही पूछा–"अबे बूढ़े! तुम्हारी औरत यह भी नहीं जानती कि गाय कौन-सी है और बकरी कौन सी ?" तीनों बूढ़े का मजाक़ उड़ाने लगे।

"अरे, वह जानती भी क्या? उसका दिमाग ठीक नहीं है, लेकिन क्या हुआ? वह तो रसोई बढ़िया बनाती है!" बूढ़े ने जवाब पिया।

"तब तो कोई बात नहीं!" एक चोर ने कहा।

बूढ़े ने सोचने का अभिनय करते हुए कहा–"आज कौन-सी रसोई बनाने के लिए कहा जाय। मुझे तो खीर खाने की इच्छा है। बतख का मांस और शहद की रोटियाँ भी बड़ी अच्छी होती हैं।" इन शब्दों के साथ बूढ़े ने टोकरी में से खरगोश को बाहर निकाला और बोला–"अरी, तुम जाकर माँ से कह दो कि हमारे लिए खीर, बतख का मांस और शहद की रोटियाँ बना कर रखे।" इन शब्दों के साथ उसने खरगोश को छोड़ दिया।

"अरे, यह तो बड़ा विचित्र मालूम होता है। सचमुच यह खरगोश घर जा कर बूढ़ी से ये सारी बातें बता देगी?" चोरों ने पूछा।

"क्यों नहीं कहेगी? मेरी बातों पर तुम्हें यक़ीन न हो तो तुम लोग भी मेरे घर
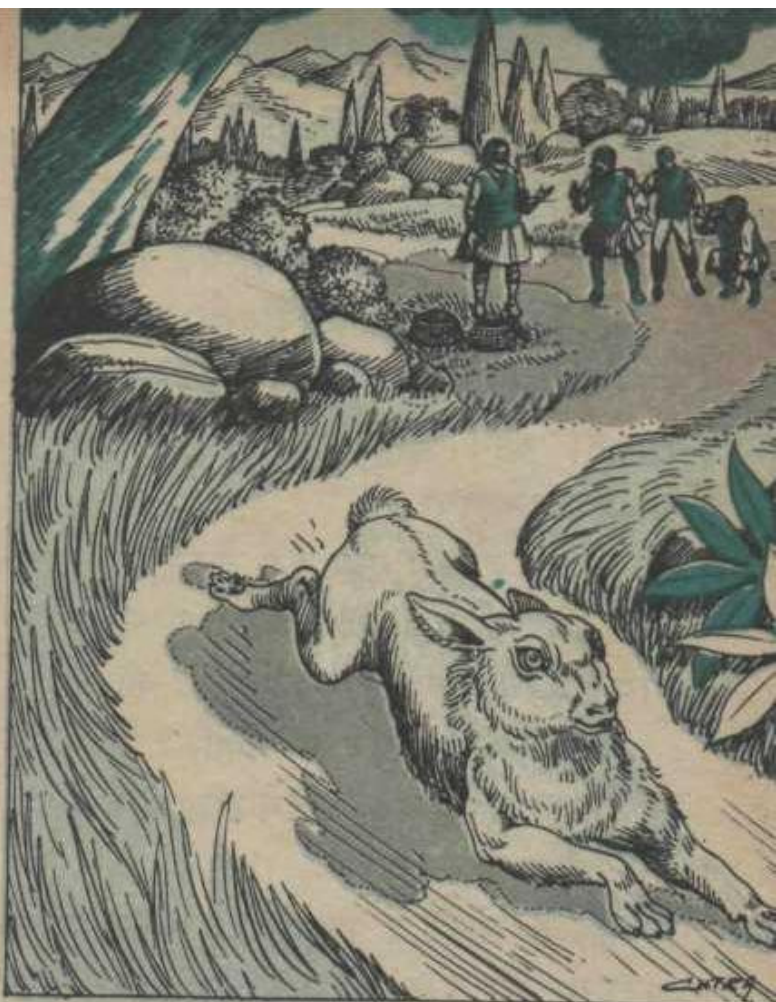
आकर भोजन करो, तब मालूम होगा।" बूढ़े ने कहा।

तीनों चोर बूढ़े के साथ उसके घर पहुँचे। बूढ़े ने बूढ़ी से पूछा–"तुम ने क्या-क्या रसोई बनायी है?"

"खरगोश ने जो कुछ कहा, वही किया।" बूढ़ी ने जवाब दिया। इसके बाद उसने चारों को खाना परोसा। बूढ़े ने खरगोश से जो बातें कही थीं, वे ही चीजें पाकर चोर अचरज में आ गये। वे धोखे में आकर आपस में खानापूसी करने लगे। आख़िर उन लोगों ने बूढ़े से खरगोश ख़रीदने की इच्छा प्रकट की।

"खरगोश बेचूँ! यह कभी नहीं हो सकता।" बूढ़े ने कहा। चोर दस हज़ार सिक्के देने के लिए तैयार हो गये।

"बेचारे वे लोग खरीदना चाहते हैं, उनके हाथ खरगोश क्यों नहीं बेचते? तुम तो रुपये चाहते थे न?" बूढ़ी ने बूढ़े को समझाया।

"अरी, हमारी गाय जैसे बकरी में बदल गयी थी, शायद यह खरगोश भी बदल जाय तो?" बूढ़े ने शंका प्रकट की।

चोरों ने एक स्वर में कहा—"डरने की कोई बात नहीं, बूढ़े! हम लोग देख लेंगे। तुम चिंता न करो।"

बूढ़े ने चोरों से दस हज़ार सिक्के लेकर खरगोश को चोरों के हाथ बेच दिया।

चोर सोचने लगे—"इस खरगोश को हम पहले अपने अपने घर भेजकर हमें जो जो रसोई चाहिये, अपनी पत्नीयों से बनाने के लिए कहला भेजेंगे। यह सोच कर हर एक ने अपनी अपनी जरूरतें अलग से खरगोश को समझा कर उसे छोड़ दिया।

घर पहुँचने पर तीनों चोरों ने जान लिया कि खरगोश उनके घर नहीं पहुँचा और बूढ़े ने उन्हें धोखा दिया है। तीनों ने बूढ़े के घर जाकर उसे गालियाँ दीं।

बूढ़े ने इतमीनान से उनकी गालियाँ सुनीं, तब कहा—"तुम लोगों ने खरगोश को भेजने के पहले उसके शरीर पर हाथ फेरा है न?" चोरों ने कहा कि उन्होंने ऐसा नहीं किया।

"तब और क्या, वह तो मुट्ठी भर हवा बन कर हवा में मिल गया होगा।" बूढ़े ने कहा।

"अरे खरगोश का हवा में मिलना क्या है? पागल की तरह मत बको।" चोरों ने कहा।

"बड़ी गाय बकरी के रूप में बदल सकती है तो क्या खरगोश हवा में नहीं मिल सकती?" बूढ़े ने चोरों से पूछा।

चोरों ने समझ लिया कि बूढ़े ने उनसे बदला ले लिया है।

भोले आदमी

एक गाँव के सब किसान वैष्णव धर्म को मानते थे और बाक़ी पेशेवर लोग शैव मत के अनुयायी थे। पेशेवर लोगों का विचार था कि किसान लोग उनके प्रति आदरभाव नहीं रखते हैं। शैव भक्तों ने सोचा कि किसानों का घमण्ड तोड़ देना है। उन सबने शिवजी की प्रार्थना की, शिवजी ने प्रत्यक्ष होकर अपने भक्तों से पूछा–"बताओ, तुम लोग क्या चाहते हो?"

"हे परमेश्वर! इस गाँव के किसान अपनी संपत्ति के बल पर घमण्ड करते हैं। समय पर बरसात होते रहने के कारण हर साल उनकी संपत्ति बढ़ती जा रही है। उनके घमण्ड को चूर करने के लिए आपको कुछ करना होगा।" शिवभक्तों ने बिनती की। "अच्छी बात है। मैं आँखें बंद कर समाधि में बैठ जाता हूँ। मेरे द्वारा आँखें न खोलने तक बरसात न होगी!" शिवजी ने समझाया। फिर क्या था, शिवभक्त गाँव में जाकर चिल्लाने लगे–"शिवजी ने आँखें मूंद ली हैं। इस साल पानी नहीं बरसेगा। तुम लोगों का घमण्ड चूर हो जायगा।"

ये बातें सुनकर किसान घबरा गये। उन सबने अपने आराध्य विष्णु की प्रार्थना की। विष्णु ने दर्शन देकर पूछा–"बोलो, तुम लोग क्या चाहते हो?"

किसानों ने भगवान विष्णु से कहा–"भगवन्, शिवभक्तों ने शिवजी की आँखें बंद करवायी हैं। उनके आँखें खोलने तक बरसात न होगी।"

"तुम लोग मिट्टी के नये बर्तन लाकर पानी से भर दो और उनमें मेंढ़क छोड़ दो। ठण्डे पानी के लगते ही मेंढ़क टर्र टर्र चिल्लाने लगेंगे।" विष्णु ने कहा।

किसानों ने भगवान विष्णु के कहे मुताबिक नये बर्तन में पानी डाल दिया

जनकी प्रसाद

और पानी में मेंढ़क छोड़ दिये। ठण्डे पानी के लगते ही मेंढ़क टर्र टर्र करने लगे।

शिवजी ने मेंढ़कों की आवाज़ सुनते ही यह सोचते आँखें खोलकर देखा–"मैंने तो बरसात को बंद कर दिया, मेंढ़कों को पानी कहाँ से मिला?" शिवजी की आँखों के खुलते ही बरसात शुरू हो गयी। किसानों ने खेत जोतकर बीज बोये। इस पर शिवभक्तों ने फिर शिवजी की पूजा की तो शिवजी ने उन्हें दर्शन दिये।

"हे परमेश्वर! बरसात के होने से किसानों ने बीज बोये। अब खेत हरे-भरे नज़र आ रहे हैं। पिछले साल से भी इस साल ज़्यादा फ़सल होने के लक्षण दिखायी देते हैं।" शिवभक्तों ने ईश्वर से कहा।

"अरे, अभी हुआ ही क्या? सुनो, मैं देखूँगा कि वे लोग चाहे जितना भी बड़ा ढ़ेर लगावे उसमें दो सौ सेर से ज्यादा अनाज न होगा!" शिवजी ने समझाया।

फिर क्या था, शिवभक्त किसानों का परिहास करने लगे–"तुम लोग चाहे जितना भी बड़ा ढेर लगा दो, दो सौ सेर से ज़्यादा एक ढेर में भी न होगा।"

इस पर किसानों ने फिर भगवान विष्णु की पूजा करके उनके दर्शन पाये और पूछा–"भगवन, हम चाहे अनाज का जितना भी बड़ा ढेर लगावे, दो सौ सेर से ज़्यादा अनाज न होगा। अब हमारा क्या होगा?"

"तुम लोग एक बीघे के धान के दस ढेर लगा दो।" यह कहकर विष्णु अंतर्धान हो गये। किसानों ने एक बीघे के धान के दस ढेर लगवाकर कई गुना धान पाया।

इस पर शिवभक्तों ने फिर अपने आराध्य देव को प्रत्यक्ष कराकर विनती की–"परमेश्वर, इस साल किसान पहले से ज़्यादा धनी बन गये हैं?"

"भक्तो! अब मैं क्या कर सकता हूँ? तुम लोगों के मुँह में बात नहीं पचती। इसलिए मेरी सहायता बेकार गयी।" यह कहकर शिवजी अंतर्धान हो गये।

यक्ष पर्वत

[५]

[गैण्डे की जाति के युवकों के कहे अनुसार उस रास्ते खड्गवर्मा और जीवदत्त आगे बढ़ते हैं और एक नदी तट पर उनसे मिलते हैं। बड़ी रात गये वे लुटेरों पर हमला करने जा रहे हैं, तभी उन्होंने देखा कि पास की एक गुफा से जटाधारी विकृत व्यक्ति लुटेरों की ओर दौड़ता जा रहा है। बाद...]

लुटेरों का नेता एक अलाव के सामने बैठकर अपने अनुचरों से बात कर ही रहा था, तभी उसने देखा कि गुफा की ओर से चिल्लाते और गरजते एक विकृत जटाधारी दौड़ता आ रहा है। उसके हाथ में जलता एक मशाल है।

"यह कैसी भयंकर आकृति है! यह कोई राक्षस है? या पहाड़ी पिशाच? तुम सब तुरंत सावधान हो जाओ! ख़तरे का हमें सामना करना है!" ये शब्द कहते लुटेरों का नेता झट उठ खड़ा हुआ।

"सरकार, देरी करने से हमारी जानें ख़तरे में पड़ जायेंगी। यह मानवों को नोच नोच कर खानेवाला राक्षस है। इसमें ज़रा भी शक नहीं है।" ये बातें कहते लुटेरों के नेता के चार अनुचर नदी तट की ओर दौड़ने लगे।

पेड़ों पर बैठे खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने इस भीभत्स को देखा। वे भी एकदम अवाक् रह गये। पेड़ के नीचे छुपे गैण्डे की जाति के चार युवक जान के डर से थर थर कांप उठे।

"खड्गवर्मा, यह विकृत आकृतिवाला न कोई राक्षस है और न कोई पिशाच। उस गुफा में रहनेवाले मान्त्रिक ने मंत्र-तंत्र करके इसे इस रूप में भेजा होगा। यह उसी मान्त्रिक का कोई शिष्य होगा।" जीवदत्त ने कहा।

"चाहे जो भी हो, हम जो काम करना चाहते थे, वह यह मान्त्रिक कर रहा है। हम सिर्फ़ देखते रह जायेंगे। सब लुटेरों के भाग जाने के बाद हम ज्वार के बोरे में रहनेवाले स्वर्णाचारी को छुड़ा कर अपने रास्ते चले चलेंगे।" खड्गवर्मा ने समझाया।

"अरे कमबख्त कायरो! ठहर जाओ! हमारे इतने लोगों के रहते यह राक्षस क्या कर सकता है? चले आओ, हमारे भाले उठाकर दल बांधकर उस पर हमला कर बैठेंगे।" इन शब्दों के साथ लुटेरों के नेता ने चिल्लाना शुरू किया।

पर उसकी चेतावनी की परवाह किये बिना उसके सभी अनुचर 'जान है तो जहान' है, सोचते अपने ऊँटों की ओर दौड़ पड़े, कुछ लोग नदी तट की ओर भाग खड़े हुए। इस बीच वह विकृत आकृति वाला सोने वाले कुछ लुटेरों पर अचानक टूट पड़ा और उन्हें लात मारते मशाल से उनके कपड़ों पर आग लगाने लगा।

विकृत आकृतिवाला जो हलचल मचा रहा था, उसे थोड़ी देर तक जीवदत्त देखता रहा, तब बोला–"खड्गवर्मा, लुटेरों का नेता हिम्मतवर मालूम होता है। उधर देखो, वह अपने कुछ अनुचरों को इकट्ठा कर पीछे से उस विकृत आकृतिवाले पर हमला करने की ताक में है।"

लुटेरों के नेता ने भागनेवाले अपने दस-बारह अनुचरों को भाला दिखाकर

डराया। उन्हें रोक कर अपने साथ ले विकृत आकृतिवाले पर पीछे से हठात् हमला करने के लिए वह तैयार हो गया।

"इस हमले से गुफ़ा का मान्त्रिक तथा उसके द्वारा निर्मित यह महाशक्ति मृत्यु को प्राप्त होंगी। उस विकृत आकृतिवाले को मारने के बाद लुटेरों का नेता पहाड़ी गुफ़ाओं को खोज-ढूँढकर उस मान्त्रिक का भी खात्मा कर देगा। हमें कोई न कोई उपाय करना होगा। हमें सिर्फ़ यही देखना है कि इस भगदड़ में स्वर्णाचारी कहीं ऊँटों के पैरों के नीचे कुचल न जाय, हमें उसकी रक्षा करनी होगी।" खड्गवर्मा ने कहा।

खड्गवर्मा की बातें पूरी भी न हो पायी थीं, तभी पहाड़ी गुफ़ा के बीच एक भयंकर ज्वाला उठी। मान्त्रिक ने तेल से भीगे मशालों को एक एक करके जलाया और 'शांभवी!' 'भैरवी!' चिल्लाते गुफ़ा के नीचे रहने वाले लुटेरों पर फेंक दिया।

जलनेवाले मशाल आकर लुटेरों पर गिरने लगे। इस नये हमले को देख लुटेरों का नेता घबरा गया और अपने अनुचरों से बोला-"अरे ऊँट वीरो, इस विकृत पिशाच जैसे कुछ और पिशाच

शायद उस पहाड़ पर की गुफा में हैं। अब हमारे लड़ने से कोई फ़ायदा नहीं है। तुम में से कुछ लोग ज्वार के भुट्टों से भरे बोरों को नदी में फेंक दो। वे नदी की धारा में तिर कर बह जायेंगे। हम आगे जाकर उन्हें किनारे लगा सकते हैं। बाक़ी लोग अपने-अपने ऊँटों को खोलकर उनपर सवार हो नदी के बहाव की ओर बढ़े चलो।"

अपने नेता की यह पुकार सुनकर नदी की ओर भागनेवाले लुटेरे तथा पेड़ों की आड़ मे छिपे लुटेरे भी आगे आये। कुछ लोग पेड़ों से बँधे ऊँटों को खोलने लगे। कुछ लोग ज्वार के भुट्टों से भरे बोरों को नदी
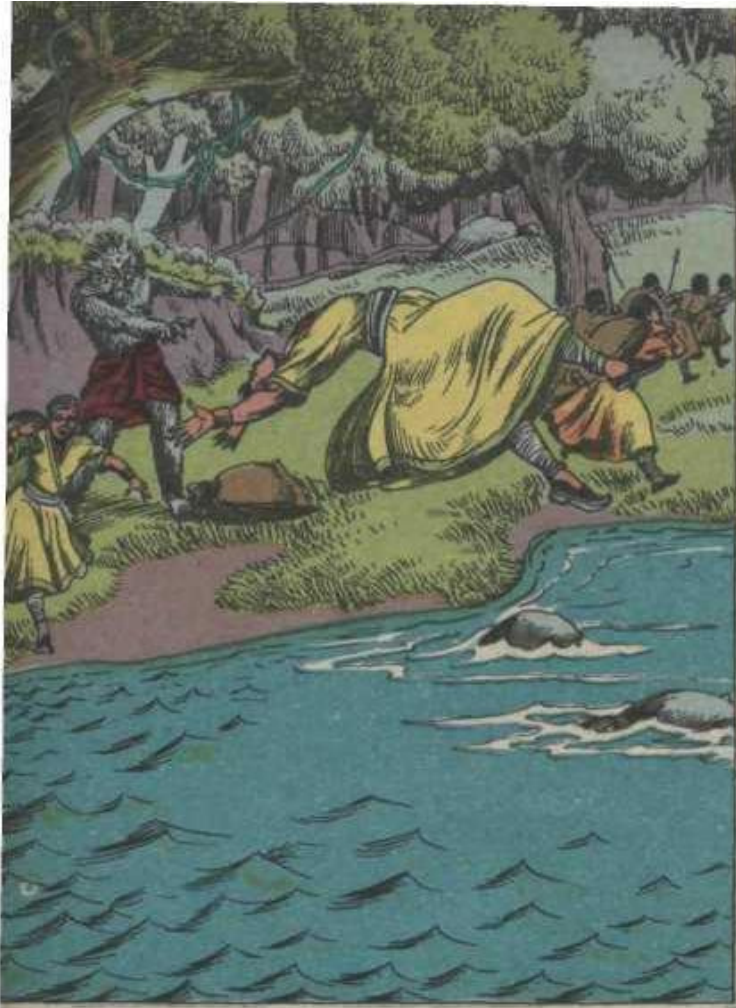
में फेंकने के लिए आगे आये। इतने में गुफा में रहनेवाला माँत्रिक अपने हाथ का मशाल इधर-उधर हिलाते चिल्ला उठा– "अरे जटाधारी भूत! उन लुटेरों का पीछा करके ज्वार के भुट्टोंवाले बोरों को नदी में फेंकनेवालों को पकड़कर उन्हें नदीमाता का आहार बना दो। इस बात का ख्याल रखो कि उनमें से एक भी जान के साथ भाग न जावे।"

तब तक हाथ में आये हुये लुटेरों को हाथों व पैरों से पीटनेवाला वह विकृत आकृतिवाला माँत्रिक की चेतावनी पाकर ज्वार के बोरोंवाले प्रदेश की ओर दौड़ पड़ा। तब तक कुछ लुटेरे बोरों को कंधों पर डालकर नदी की ओर दौड़ते जा रहे थे। जटाधारी भूत ने उनमें से जो भी हाथ में आया, उसकी कमर पकड़कर नदी में फेंकना शुरू किया। देखते-देखते उस प्रदेश हो-हल्ला मच गया।

इस बार नदी के तट पर और ज्यादा हलचल मच गयी। इस भगदड़ से घबरा कर ऊँटों ने अपने रस्सों को तोड़ दिया और उस अंधेरे में लोगों को कुचलते अंधाधुंध भागने लगे। उनमें से थोड़े ऊँट चिल्लाते नदी में जा गिरे और नदी के प्रवाह में बहने लगे।

उस वक़्त एक मनुष्य का स्वर सुनाई पड़ा–"मुझे बचाइये! मुझे बचाइये! मुझे नदी में मत फेंकिये।" उसी वक़्त धम्म् आवाज़ के साथ ज्वार के भुट्टों से भरा एक बोरा पानी में जा गिरा।

"खड्गवर्मा, क्या तुमने उस आवाज़ को पहचान लिया? वह चिल्लाने वाला व्यक्ति और कोई नहीं, स्वर्णाचारी है! उसे लुटेरों ने नदी में फेंक दिया है। ज्वार के भुट्टोंवाला बोरा पानी में नहीं डूबता, इसलिए कंठ तक बंद किया हुआ स्वर्णाचारी पानी के बहाव में बहकर कहीं न कहीं किनारे लग जायगा। लेकिन हमने भूल की है। थोड़ी देर पहले यदि हमने कोशिश की होती तो उसकी हम यहीं पर रक्षा

कर सकते थे।" जीवदत्त ने पेड़ पर से उतरते हुए कहा।

खड्गवर्मा ने उसका कंधा पकड़कर रोकते हुए पूछा–"अब तुम क्या करने जा रहे हो?"

"गैण्ड़े की जाति के एक युवक को नदी तट से होकर बहाव की ओर जाने के लिए कहूँगा। शायद उसे स्वर्णाचारी की चिल्लाहट सुनायी दे सकती है। बाक़ी तीनों युवकों को गैण्डों पर सवार हो लुटेरों का वध करने का आदेश दूंगा।" जीवदत्त ने समझाया।

"तब तो क्या हम यहाँ पर हाथ बाँधे यह तमाशा देखते केवल बैठे रहेंगे?" खड्गवर्मा ने रोष भरे स्वर में पूछा।

"खड्गवर्मा! जल्दबाजी मत करो। लूटेरे तितर-बितर हो इधर-उधर दौड़ रहे हैं, मगर उनका नेता अब भी चुराये गये ज्वार के भुट्टोंवाले बोरों की रक्षा करने के प्रयत्न में जटाधारी भूत का सामना करने की कोशिश कर रहा है। क्या तुम सुन नहीं रहे हो? वह अपने अनुचरों को कैसी चेतावनी दें रहा है? हमारे युवकों के हाथों से बचकर भागने की कोशिश करेगा तो तब हम अपने बाणों से मारकर उसका वध करेंगे। पहले हमें इस जटाधारी भूत और माँत्रिक की जान लेनी है।" जीवदत्त ने कहा।
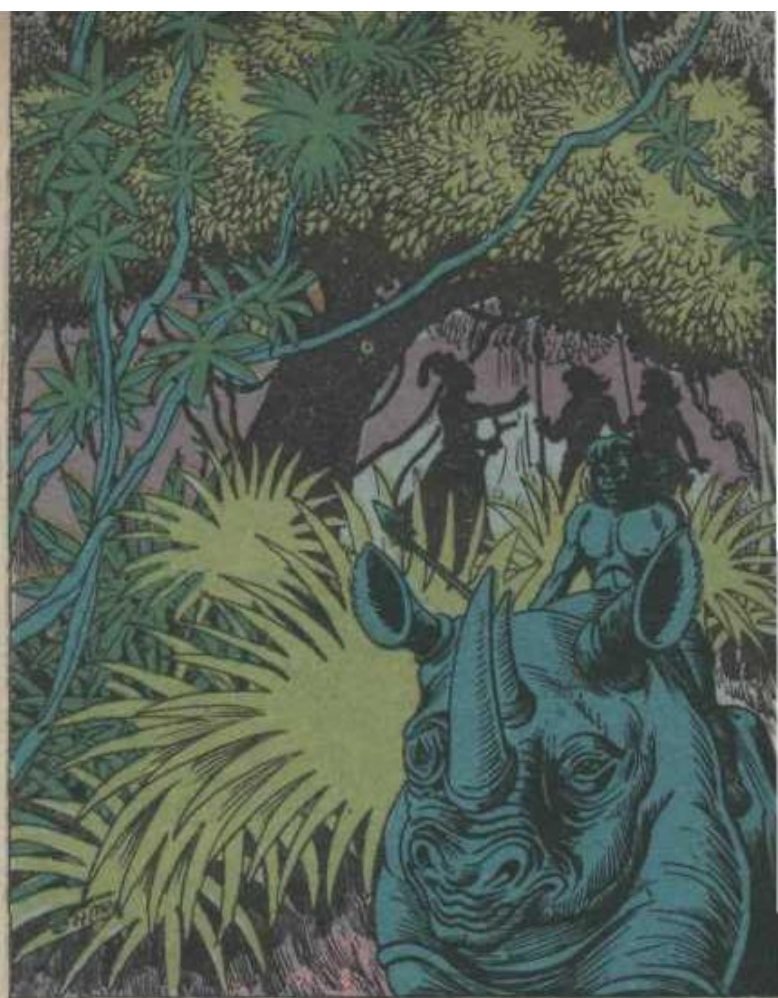
"अच्छी बात है! गैण्डे की जाति के युवकों को जो कुछ तुम समझाना चाहते हो, समझाकर लौट आओ, में यहीं रहूँगा।" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा ने धनुष और बाण अपने हाथ में लिये। वह चौकन्ना हो इधर उधर ताकने लगा कि दुश्मन कहीं पीछे से उसपर हमला न कर बैठे।

जीवदत्त पेड़ से उतरकर गैण्डे के युवकों के पास गया और उन्हें सारी बातें समझा दीं। इसके तुरंत बाद एक गैण्डा युवक गैण्डे पर सवार हो नदी के बहाव की ओर चल पड़ा। लेकिन बाक़ी तीनों ने

थोड़ी देर तक सकुचाकर यों कहा– "सरकार! इन लुटेरों और ऊँटों से तो हमारा डर जाता रहा। मगर उस जटाधारी भूत की बात क्या है? क्या वह हमें जान से खा नहीं डालेगा?"

"उस भूत की बात तथा उसे उकसाने वाले माँत्रिक की बात हम देख लेंगे। तुम लोग जो भी लुटेरा सामने आया, उसे मार डालो। उन लोगों ने तुम्हारी फ़सल को लूट लिया है, तुम लोग क्या खाओगे? यह बात याद रखो।" जीवनदत्त ने चेतावनी दी।

अपनी फसल के लुटने की बात याद आते ही गैण्डे की जाति के युवक दाँत मींचते हुए बोले–"सरकार! इन दुष्टों को हम जान से नहीं छोड़ेंगे।" ये शब्द कहकर वाहनों पर सवार हो–"जय अरण्यमाता की!" चिल्ला उठे और लुटेरों पर टूट पड़े।

जटाधारी भूत के हमले से ही घबरा कर तितर-बितर होनेवाले लुटेरे अपने नेता की चेतावनी पाकर फिर से वहाँ पर जमा हो रहे थे, लेकिन अब गैण्डों पर आनेवाले उन युवकों को देखते ही वे एकदम भयभीत हो उठे और बोले–"गैण्डे की जाति के लोग हम पर आक्रमण कर रहे हैं, मालिक! अब भाग जाने के सिवाय कोई उपाय नहीं है।" इन शब्दों के साथ वे लोग नदी तट की ओर तथा वृक्षों की ओट में भागने लगे।

इस नये हमले को देखने पर लुटेरों के नेता की हिम्मत भी टूट गयी। एक ओर जटाधारी भूत और दूसरी ओर भाले उठाये हमला करनेवाले गैण्डे की जाति के लोग! उसने भी सोचा कि दोनों ओर लड़ना बेकार है। इसलिए उसने ऊँचे स्वर में आदेश दिया–"तुम सब नदी के बहाव की ओर भाग जाओ! हमें ज्वार के भुट्टोंवाले बोरों को कहीं न कहीं किनारे लगाना है।" ये शब्द कहते वह भी भाग खड़ा हुआ।

"उफ़! मैंने देरी करके बड़ी बेवकूफ़ी की। वह दुष्ट प्राणों के साथ भाग गया।" ये शब्द कहते पेड़ पर बैठे हुए खड्गवर्मा ने लुटेरों के नेता पर लगातार बाणों की वर्षा की। मगर तब तक वह अपने अनुचरों के साथ काफी दूर भाग गया था, जिस से बाणों का उस पर कोई असर न हुआ।

गैण्डे के युवकों ने लुटेरों में से तीन-चार युवकों पर भाले चलाये, इतने में वे सब अपने नेता की चेतावनी पाकर वहाँ से भाग गये। अब वह प्रदेश एक दम सुनसान हो गया था।

गुफा के भीतर रहनेवाला माँत्रिक बाहर आया। मशाल को ऊपर उठाये सर हिलाते चिल्ला उठा-"अरे जटाधारी भूत! तुम कहाँ? क्या ज्वार के भुट्टोंवाले बोरे हमारे हाथ न लगे?"

जटाधारी भूत बड़-बड़े क़दम बढ़ाते नदी तट से गुफ़ा की ओर चल पड़ा, तब उसकी नज़र गैण्ड़े की जाति के युवकों पर पड़ी। तुरंत वह डरकर ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठा-"ये लोग तो काल के दूत हैं। एक सींगवाले महिषों पर सवार हो चले आये हैं।"

यह चिल्लाहट सुनते ही माँत्रिक गुफ़ा में से बिलकुल बाहर आया और मशाल की रोशनी में गैण्ड़ों तथा उनपर सवार हुए युवकों को देख पल भर के लिए चकित हुआ, फिर अपने को संभालते हुए बोला-"अरे जटाधारी भूत! ये लोग न

काल के दूत हैं और नये एक सींगवाले महिष ही हैं, ये लोग गैण्ड़े की जाति के लोग हैं और ये तो गैण्डे हैं, समझें। तुम उन पर हमला करके पहले मनुष्यों को खा डालो, तब उन जानवरों को खा सकते हो।"

माँत्रिक का यह कहना था कि जटाधारी भूत विकट अट्टहास कर उठा—"अह ह! भागो मत! रुक जाओ!" ये शब्द कहते अपने हाथ फैलाकर गैण्ड़े की जाति के युवकों की ओर टूट पड़ा।

उस भूत को अपनी ओर आते देख गैंडे की जाति के तीन युवक चिल्ला उठे—"मालिक! हम मर गये।"

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने पहले ही भाँप लिया था कि गैण्डे के युवक खतरे में फँसने जा रहे हैं, इसलिए वे दोनों पेड़ों पर से उतरकर उनके पास दौड़ते आ रहे थे। गैण्डे के युवकों की चिल्लाहट को सुनते ही खड्गवर्मा ने निशाना देख जटाधारी भूत पर बाण छोड़ा। वह भूत से जा लगा। मगर उसके शरीर पर जो जटाएँ थीं, उनकी वज़ह से जटाधारी भूत पर कोई घाव न हुआ।

"गुरु! मुझ पर किसी ने दूर से लकड़ी का काँटा मारा है!" जटाधारी भूत चिल्लाया।

माँत्रिक आश्चर्य में आ गया। इस बार उसने अपने दोनों हाथों में दो मशाल पकड़े ऊपर उठाकर उनकी रोशनी में खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को देखा, जो आगे की ओर दौड़ते आ रहे थे। तब वह अपनी आँखें लाल करके दाँत मींचते गरज उठा—"अरे जटाधारी भूत! तुम्हारे शरीर में जो चुभ गया वह लकड़ी का काँटा नहीं, बाण है। बाण छोड़नेवाला व्यक्ति क्षत्रिय जैसे लगता है। उसके साथ रहने वाला आधा क्षत्रिय और आधा माँत्रिक जैसा मालूम होता है। ठहर जाओ, मैं अपना मंत्र दण्ड फेंककर इन दोनों को भस्म कर देता हूँ।" ये शब्द करते वह उछलकर गुफा के भीतर चला गया।

(और है)

चोर का सम्मान

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, मुझे संदेह हो रहा है कि तुम यह जो श्रम उठा रहे हो, यह सज्जनों के वास्ते है या दुर्जनों के वास्ते। कुछ ऐसे राजा हैं जो महाराजा चन्द्रसेन की भाँति जिन्हें दण्ड देना है उनका सम्मान करते हैं। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें चन्द्रसेन की कहानी सुनाता हूँ, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: बहुत समय पूर्व चन्द्रावती नगर पर महाराजा चन्द्रसेन शासन करता था। उस देश में अनेक करोड़पति व्यापारी थे, लेकिन वह देश संपन्न न था। अधिकांश लोग गरीब थे। वास्तव में उस देश की सारी संपत्ति व्यापारियों के हाथों में थी। इसलिए

वेताल कथाएँ

राजा भी व्यापारियों पर निर्भर हो शासन करता था। उनकी सुविधाओं पर ध्यान देना राजा का प्रमुख कर्तव्य था।

मगर चन्द्रावती नगर के व्यापारियों के सामने एक जटिल समस्या पैदा हो गयी। उसी नगर में एक डाकू निकल आया। उसकी खासियत यह थी कि पहले ही अमीरों को आगाह किये बिना वह एक भी चोरी नहीं करता था।

फिर भी उस डाकू को पकड़ना किसी के लिए भी संभव न हुआ। इसकी वजह यह थी कि डाकू अकेला था। किसीने उसे देखा न था, इसलिए उसे पहचाननेवाला भी कोई न था। अलावा इसके वह जो कुछ चुराता उसे तुरंत गरीबों में बांट देता था। जिन लोगों ने उसके द्वारा धन की सहायता पायी, उन लोगों ने भी उसे देखा न था।

उस डाकू से सभी व्यापारी डरते थे। सबने मिल कर डाकू को पकड़ने के अनेक प्रयत्न किये, पर वे सफल न हुए। आखिर सभी ने राजा के पास जाकर चेतावनी दी– "महाराज, इस डाकू के बारे में कोई खास क़दम उठाये बिना आपका चुप रहना ठीक नहीं। उस डाकू से हमारी रक्षा करने की जिम्मेदारी आप पर ही है।"

"मैंने भटों को डाकू को पकड़ने के लिए नियुक्त कर रखा है। अपनी तरफ़ से मैंने कोई कसर उठा नहीं रखी है। कभी न कभी वह हमारे हाथ लग ही जायगा।" राजा ने जवाब दिया।

"आपके सफल होने के अन्दर हम सब भिखारी बन जायेंगे। इसलिए आप तुरंत ऐसा ढिंढोरा पिटवा दीजिये कि जो आदमी चोर को पकड़ेगा, उसे दस हजार रुपये का इनाम दिया जायगा। तब उस डाकू का कोई न कोई मित्र उसे पकड़वा देगा। चाहे तो वे दस हजार हम ही लोग देंगे।" व्यापारियों ने समझाया।

राजा ने व्यापारियों के कहे मुताबिक़ ढिंढोरा पिटवा दिया। मगर इससे कोई फ़ायदा न रहा। किसीने चोर को पकड़ाया

नहीं, डाकू चोरी करता ही जा रहा था। वह डाकू और कोई न था, गंगादास नामक एक गरीब आदमी था। वह सिवाय चोरी करने के कोई दूसरा पेशा जानता न था। उसने देखा था कि विभिन्न पेशेवर लोग भूखों मर रहे हैं। इसलिए उसके तथा उसके जैसे लोगों के पेट भरने के लिए उसने अपनी चोरी करने की कला का उपयोग करना शुरू किया।

एक दिन गंगादास जंगल में स्थित एक पहाड़ी गाँव से लौट रहा था। इतने में अंधेरा फैल गया। जल्दी घर पहुँचने के ख्याल से वह तेज़ी से चलने लगा। तब उसे एक झाड़ी में से किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी। गंगादास उस ओर बढ़ा, झाड़ियों के बीच घायल हो पड़े एक आदमी को उसने देखा।

"क्या हुआ है, भाई? तुम कौन हो?" गंगादास ने उस आदमी से पूछा।

"मेरा नाम रामदत्त है। मैं राजगिरि का निवासी हूँ। व्यापार करने के ख्याल से मैं चन्द्रावती नगर में जा रहा था। रास्ते में भालू ने मुझ पर हमला कर दिया। क़िस्मत बली थी, भालू ने मुझे प्राणों के साथ छोड़ दिया। लेकिन तुम कौन हो?" उस व्यापारी ने पूछा। गंगादास ने अपना नाम बदलकर कहा–
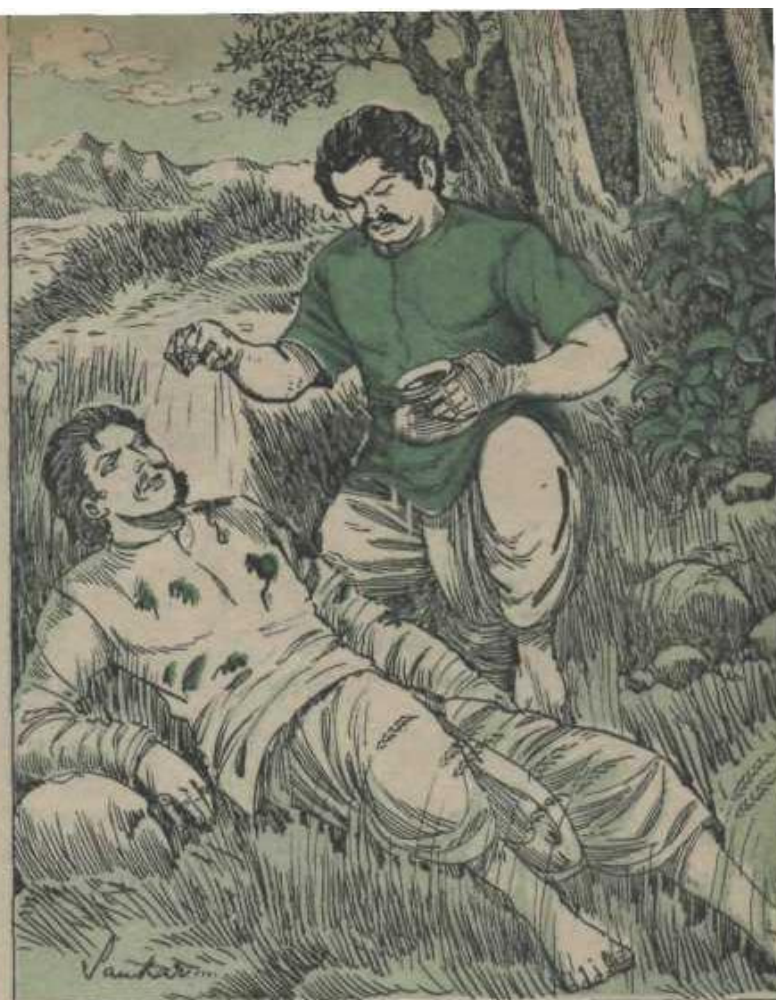
"मेरा नाम धर्मदास है। मैं एक गरीब आदमी हूँ।"

इसके बाद गंगादास रामदत्त को अपने घर उठा लाया। उसके घावों पर दवा लगाकर उसकी सेवा करने लगा।

गंगादास को जब-तब रात के वक़्त घर से बाहर निकलते देख रामदत्त ने उससे पूछा–"तुम रात के वक़्त कहाँ जाते हो?"

गंगादास झूठ-मूठ कोई जवाब देता।

रामदत्त के चंगे होने में काफी दिन लगे। इस बीच उन दोनों मे अच्छी दोस्ती हो गयी। रामदत्त ने एक दिन गगादास से ज़ोर देकर पूछा–"तुम्हारा कौन-सा पेशा है? तुम कैसे अपने दिन काटते हो?"
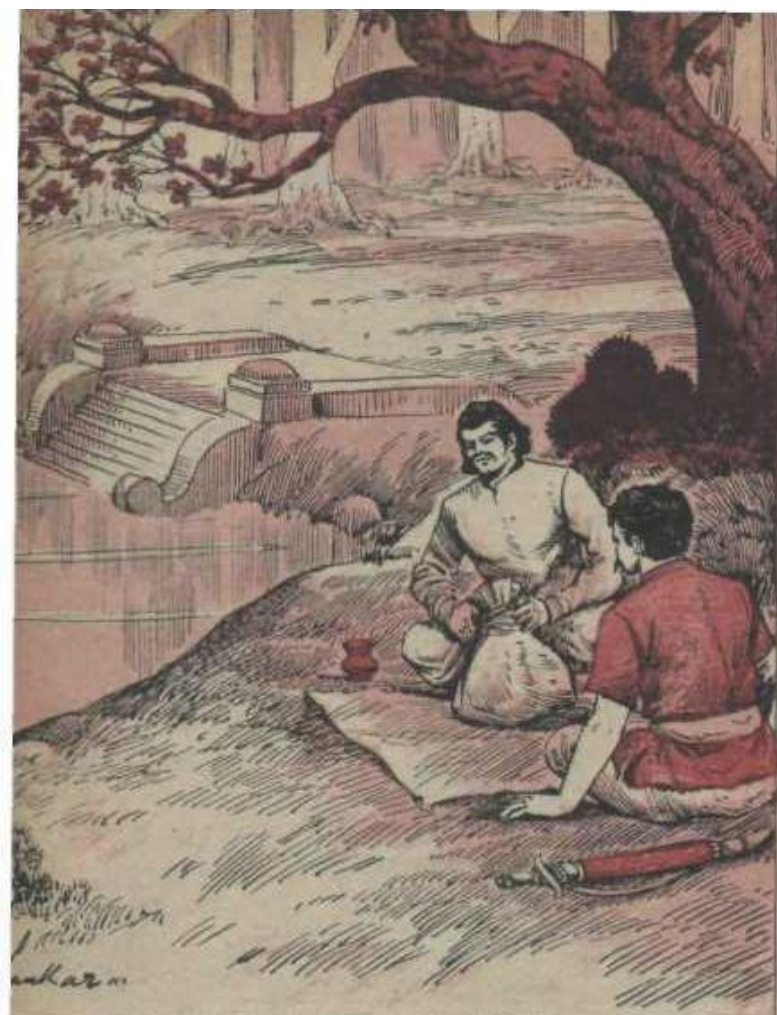
रामदत्त पर गंगादास का विश्वास जम गया था, इसलिए गंगादास ने अपना सच्चा हाल उसे सुनाया।

रामदत्त को जब यह मालूम हुआ कि गंगादास एक डाकू है, तब से गंगादास के प्रति उसका आदर भाव जाता रहा। उसे मालूम हो गया था कि गंगादास को पकड़ानेवाले को दस हज़ार रुपये का पुरस्कार मिलेगा। इसलिए उसके मन में यह आशा पैदा हुई कि वह पुरस्कार प्राप्त करके उसके द्वारा लाखों रुपये कमाया जा सकता है।

वह गंगादास को पकड़वाने की ताक में था। एक दिन जब गंगादास पड़ोसी गाँव में गया, तब रामदत्त ने राजा के पास जाकर निवेदन किया कि वह डाकू को पकड़ा देगा, इसलिए उसे दस हज़ार का पुरस्कार दिलाया जायें!

"कोई बहाना बनाकर डाकू को कल दुपहर के समय राजमहल के पास बुला लाओ, मेरे सिपाही उसे पकड़ लेंगे।" राजा ने कहा।

रामदत्त की खुशी का ठिकाना न रहा। वह गंगादास के घर आया। गंगादास के लौटने पर रामदत्त ने उससे कहा-"दोस्त, मैंने आज तक शहर देखा नहीं। क्या कल मुझे सारा शहर दिखलाओगे?" इस पर गंगादास ने मान लिया। उसे रामदत्त के प्रति ज़रा भी संदेह न था।

दोनों रोटियाँ बाँध कर दूसरे दिन सवेरे शहर देखने के लिए चल पड़े। दुपहर के समय वे राजमहल के समीप पहुँचे। वहाँ के तालाब के पास पेड़ों की छाया में बैठकर रोटी खाने लगे।

उस वक़्त कहीं से एक कुत्ता दुम हिलाते वहाँ पर आ पहुँचा। रामदत्त ने उसे डाँट बताया, पर गंगादास ने रोटी का एक टुकड़ा उसके आगे डाल दिया।

रोटी खाने के बाद रामदत्त ने गंगादास से कहा-"चलो, हम राजमहल के द्वार के पास चले जाय।"

दोनों चल पड़े। कुत्ता गंगादास के पीछे चला आया। वे दोनों राजमहल के सामने जा पहुँचे। रामदत्त ने राजमहल के द्वार के पास खड़े सिपाहियों की ओर देखा। लेकिन उन लोगों ने गंगादास को पकड़ने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

तब रामदत्त ज़ोर से इस तरह चिल्लाया–"अबे, तुम तो हमारे हाथ लग गये। अब भागकर कहाँ जाओगे?"

रामदत्त की नमक हरामी देख गंगादास का ख़ून खौल उठा। उसको मारने के ख़्याल से गंगादास ने कमर से छुरी निकाली। लेकिन पहले से ही तैयार रामदत्त ने गंगादास पर छुरी फेंक दी। मगर गंगादास के साथ रहनेवाला कुत्ता उछलकर छुरी के सामने आ पहुँचा। छुरी कुत्ते की बगल में घुस गयी और कुत्ता मर गया।

दूसरे ही क्षण गंगादास ने अपनी तलवार निकाल कर रामदत्त का सर काट डाला। तब सिपाहियों ने आगे बढ़कर गंगादास को बन्दी बनाया।

गंगादास ने रामदत्त के शव पर लात मारकर कहा–"अरे बदमाश! तुझसे गाँव का यह कुत्ता कहीं अच्छा है।" ये शब्द कहकर गंगादास सिपाहियों के साथ राजा के सामने गया। राजा ने बड़ी देर तक एकांत में गंगादास से बात की।
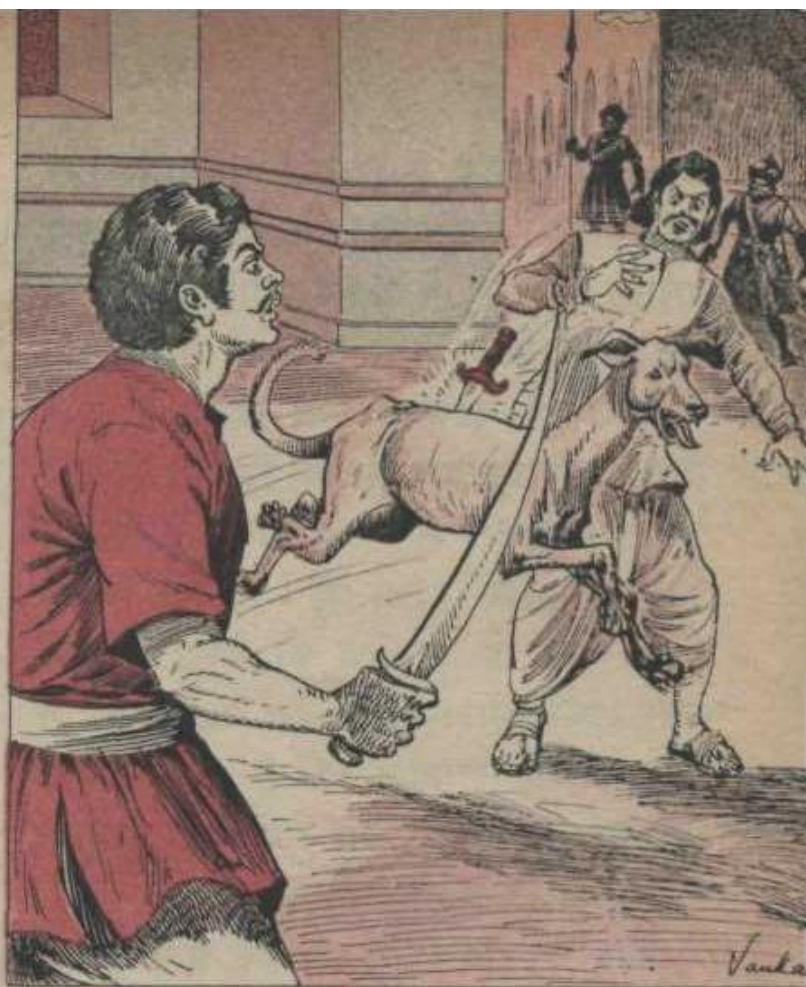
दूसरे दिन सभी प्रमुख व्यापारियों को राजा ने दरबार में बुला भेजा, उन्हें डाकू गंगादास को दिखाकर कहा–"इस गरीब ने हमारे राज्य का महान उपकार किया है। आगे तुम लोगों को चोरों का डर नहीं रहेगा। तुम सब लोग हर एक दस-दस हज़ार रुपये इसे दे तब भी इसका ऋण तुम लोग चुका न सकेंगे।"

व्यापारियों ने राजा के कहे मुताबिक़ किया। इसके बाद गंगादास राजा के अंतरंग सलाहकार के पद पर नियुक्त हुआ।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, महाराजा चन्द्रसेन के व्यवहार

का क्या मतलब है ? उनके सिपाहियों ने गंगादास को देखते ही उसे क्यों बन्दी नहीं बनाया ? डाकू के पकड़े जाने के बाद भी उसे दण्ड दिये बिना राजा ने व्यापारियों के द्वारा उसे पुरस्कार क्यों दिलाये ? और उसे अपने सलाहाकार क्यों नियुक्त किया ? क्या गंगादास ने झूठ बता दिया कि उसीने डाकु को मार डाला है। उसके पिछले दिन राजा ने रामदत्त को देखा था न? क्या राजा गंगादास को देख यह समझ न पाया कि वह रामदत्त नहीं है । इन सबका समाधान जानते हुए भी न दोगे नो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा ।"

इस पर विक्रमार्क ने यों कहा-"मुझे तो ऐसा मालूम न होता कि डाकू के द्वारा राजा का कोई नुक़सान हुआ हो । राजा तो व्यापारियों के हाथ का खिलौना है । व्यापारियों का नुक़सान राजा को किसी प्रकार से बाधक नही है । इसलिए डाकू को पकड़ने के संबंध में राजा के मन में कोई जिज्ञासा न होगी । अलावा इसके जब राजा गरीबों की मदद नहीं कर पा रहा था, वह काम डाकू किया करता था । इस प्रकार शायद डाकू राजा का प्रतिनिधि हो । डाकू को पकड़वाने के लिए जो आगे आया, वह विश्वासघातक हुए बिना नहीं रह सकता । इसलिए राजा ने उसका काम डाकू के द्वारा ही तमाम करने दिया । गंगादास ने राजा से सच्ची बातें बतायी होंगी । झूठ बोल कर दस हज़ार रुपये पाने का लोभ डाकू के मन में नहीं है । इसीलिए राजा ने उसे दण्ड नहीं दिया । राजा यह जानता था कि उसने व्यापारियों के द्वारा गंगादास को जो धन दिलाया, वह गरीबों के हाथों में पहुँच जायगा । शायद राजा ने डाकू को इसलिए अपना सलाहकार नियुक्त किया कि उसके द्वारा नगर के प्रमुख व्यापारियों के रहस्य जान कर उनकी पकड़ से मुक्त हो सके ।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा । (कल्पित)

उदारता का मूल्य

एक गाँव में एक अमीर था। उसके यहाँ चार गायें थीं। गायों की देखभाल के लिए उसके यहाँ एक गरीब किसान था। अमीर के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि वह गाँववालों के बीच उदार स्वभाव का कहलवावे। इसके लिए उसने एक उपाय किया। उसने अपने दो नौकरों को चोरों का वेश धरवाकर उन्हें आदेश दिया कि किसान जब गायों को हाँकते घर लौटेगा, तब वे एक गाय की चोरी करे। नौकरों ने ऐसा ही किया।

किसान तीन गायों के साथ घर लौटा और उसने गाय के चोरी होने का हाल बताया।

"अरे, तुम क्या कर सकते हो? चिंता न करो।" अमीर ने किसान को समझाया। इसलिए किसान को बड़ा आश्चर्य हुआ। गाँववाले अमीर की भलमानसी पर उसकी तारीफ़ करने लगे।

इसके बाद दूसरे व तीसरे दिन भी इसी तरह दो गायों की चोरी हो गयी। उस वक्त भी अमीर ने किसान को नहीं डांटा। फिर क्या था, अमीर की उदारता का यश आसपास के सभी गाँवों में फैल गया।

आख़िर एक दिन किसान अकेले घर आया और मालिक से बताया कि चौथी गाय की भी चोरी हो गयी है। यह कहकर वह काम छोड़ अपने घर चला गया।

अमीर को इस बात का बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसने अपने नौकरों से चौथी गाय की चोरी करने को नहीं बताया था। तीन गायों की चोरी हो जाने से वह चुप रहा। पर वह यह बात नहीं जानता था कि चौथी गाय की चोरी गरीब किसान ने ही की है।

अपराध का दण्ड

एक जमाने में पांचाल देश पर विजयसिंह नामक राजा राज्य करता था। वह बड़ा दयालु था। इसलिए लोग उसके राज्य को रामराज्य कहा करते थे। मगर उसके कोई संतान न थी। इसलिए विजयसिंह ने अपनी पत्नी के साथ तीर्थाटन करना चाहा। इस विचार के आते ही विजयसिंह अपने छोटे भाई जयसिंह को राज्य सौंप कर तीर्थाटन पर चल पड़ा।

जयसिंह पहले से ही भोगलालसी था। भाई के स्थान पर राजा बनने के बाद उसे अधिकार का आनंद भी मालूम हो गया। शासनकार्य संभालने के लिए समर्थ मंत्री थे। राज्य की रक्षा करने के लिए योग्य सेनापति भी थे। फिर क्या था, जयसिंह के दिन बड़े मज़े में बीतने लगे।

जयसिंह के मन में जब भी यह विचार आता कि उसका यह सारा वैभव उसके बड़े भाई के लौटने तक ही है, तो वह बड़ा दुखी होता। उसके मन में यह आशा जमती कि यदि किसी कारण से उसका बड़ा भाई न लौटा तो उसके कोई संतान न होने के कारण राज्य का वारिस वही होगा। इस प्रकार कई महीने बीत गये।

उन्ही दिनों में जयसिंह को यह समाचार आया कि विजयसिंह तीर्थाटन समाप्त कर राजधानी में लौट रहा है। राजधानी की सारी जनता बड़ी प्रसन्न हुई। मगर जयसिंह अकेला ही चिंतित था। लेकिन प्रकट रूप में उसने भी सबके साथ संतोष का अभिनय किया।

उस रात को जयसिंह अपने एक विश्वासपात्र सेनापति को अपने महल में बुला भेजा और यह परामर्श किया कि उस रात को उसके भाई तथा भाभी ने जहाँ पर विश्राम किया है, वहीं पर उनकी

रवीन्द्रकुमार भुवाल्का

हत्या की जाय। उनके वार्तालाप को जयसिंह की पत्नी रूपमती ने सुना।

दूसरे दिन सवेरे राजधानी में यह समाचार आया कि विजयसिंह अपनी पत्नी के साथ मार डाले गये हैं। सारा नगर शोक में डूब गया। सबके साथ जयसिंह ने अपना दुख प्रकट किया। इस बार उसने सत्य ही दुख का अनुभव किया। क्योंकि उसने राज्य के वास्ते अपने भाई की हत्या करायी है, पर वह सचमुच अपने भाई को हृदय से चाहता था।

इसके बाद जयसिंह ने अपने भाई और भाभी के दहन-संस्कार करवाये और उसने नियमानुसार अपना राज्याभिषेक करवाया।

सब से विचित्र बात तो यह थी कि वास्तव में जयसिंह जब राजा बना, तब उसके मन से अधिकार के प्रति मोह जाता रहा। जनता को सुखी रखने के लिए उसने दिन-रात कार्य किया और उसमें वह सफल भी हुआ। वह अपने भाई से बढ़कर यश प्राप्त करना चाहता था। धीरे-धीरे जनता विजयसिंह को बिलकुल भूल गयी और कहने लगी कि जयसिंह जैसा राजा कहीं न होगा।

जयसिंह जब सिंहासन पर बैठा, तब उसकी रानी रूपमती गर्भवती थी। गद्दी पर बैठने के कुछ ही महीनों बाद जयसिंह को शत्रु राजाओं के साथ युद्ध करना पड़ा। क्योंकि विजयसिंह की मृत्यु होने से पड़ोसी
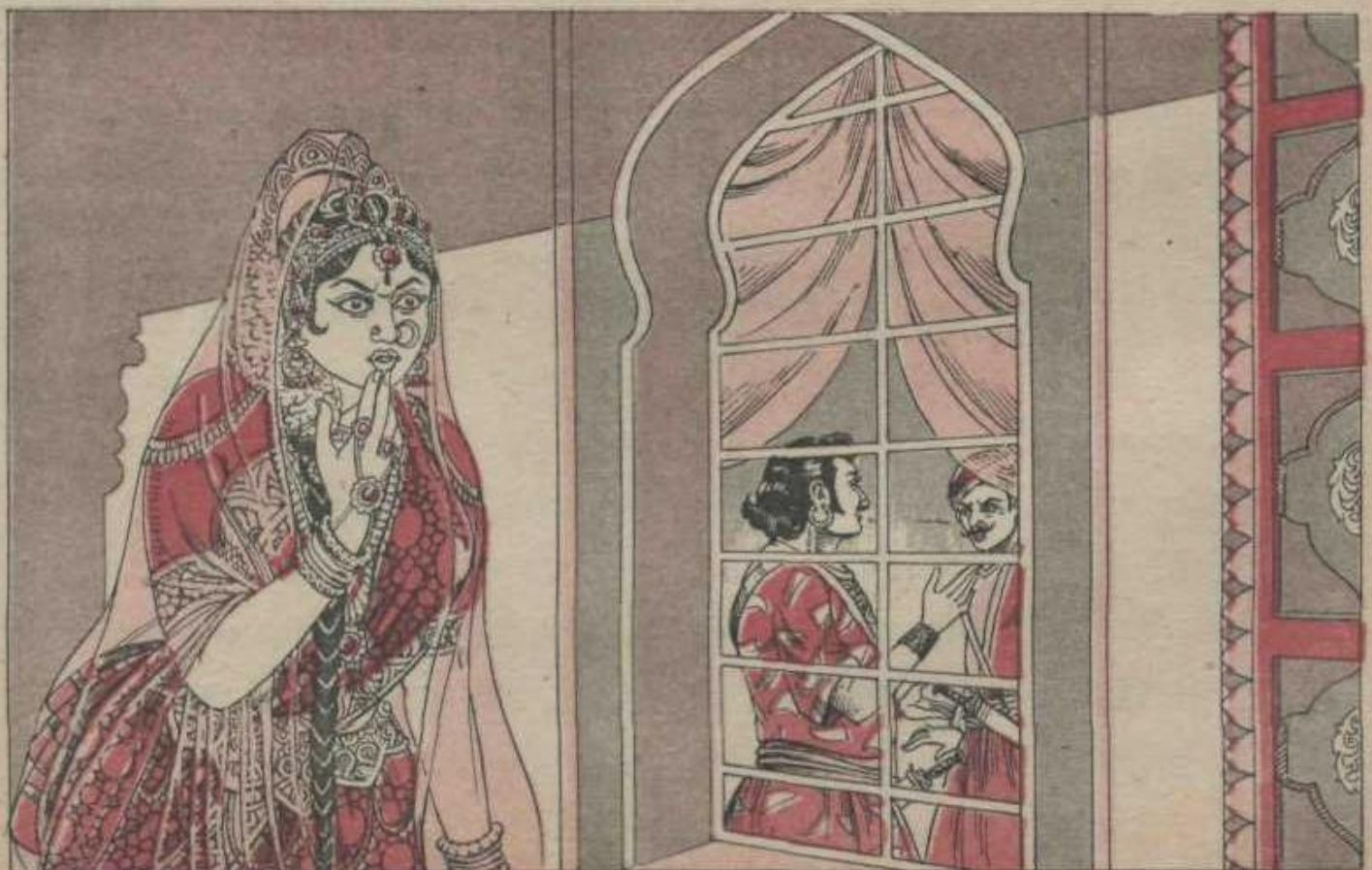
राजाओं ने सोचा कि पांचाल देश को आसानी से जीता सकता हैं।

जयसिंह के शत्रु राजाओं से युद्ध करने के लिए जाने के थोड़े दिन बाद रूपमती ने जुड़वें बच्चों का जन्म दिया। बच्चों को देख जहाँ रूपमती को अपार आनंद हुआ, वहाँ पर उसके मन में घबराहट भी बढ़ती गयी। उसने सोचा, बच्चे परस्पर अत्यंत प्रेम के साथ बढ़ते हैं। लेकिन जहाँ राज्य पर अधिकार करने की बात उठेगी, वहाँ पर ये एक दूसरे के प्राण लेने को तैयार हो जायेंगे। वह जानती थी कि उसका पति अपने भाई को हृदय से चाहता था, मगर राज्य के वास्ते उसने अपने भाई की जान ले ली है। राज्य का लोभ कैसा भयंकर होता है।

इसलिए रूपमती अपनी दाई माधवी से बोली–"माधवी, तुम्हें मेरा एक उपकार करना होगा। मुझे दो बच्चे नहीं चाहिये। इन में से एक को कहीं जंगल में छोड़ आओ। इस बच्चे के साथ दस हज़ार स्वर्णमुद्राओं की थैली भी रख आओ। कोई धन के लोभ में पड़कर इसका पालन-पोषण करेगा।"

पहले माधवी ने यह काम करने से साफ़ इनकार किया। तब रूपमती ने अपने पति की करनी का परिचय दिया। तब वह एक बच्चे के साथ दस हज़ार स्वर्णमुद्राओं की थैली लेकर चल पड़ी। रूपमती ने अपनी करनी पर पश्चात्ताप तो नहीं किया, पर वह दुखी ज़रूर हुई।

अंतःपुर का कोई भी व्यक्ति नहीं जानता था कि रूपमती के जुड़वें बच्चे हुए हैं। शत्रुओं को पराजित कर जयसिंह जब लौटा, तब वह यह जान कर बड़ा प्रसन्न हुआ कि उसके पुत्र हुआ है। उसका नामकरण जयचंद्र किया गया।

उधर दाई माधवी ने बच्चे को जंगल में छोड़ नहीं दिया, बल्कि उसे अपने घर लाकर बड़ी सावधानी से पालने लगी। उसने बच्चे का नाम करण माधव किया।

राजमहलों में जयचन्द्र दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। पर रानी रूपमती अपने दूसरे पुत्र के बारे में चिंतित रहने लगी।

समय बीतता गया। जयचन्द्र सभी युद्ध-विद्याओं में प्रवीण हुआ। अब वह युवक हो चुका था। राजा जयसिंह ने विजयादशमी के दिन सभी विद्याओं के प्रदर्शन का प्रबंध किया और इस बात की घोषणा भी करायी कि जो युवक युवराज जयचन्द्र को हरायगा, उसे भारी इनाम दिया जायेगा। उस प्रदर्शन को देखने के लिए लोग दूर प्रदेशों से भी आ गये थे। कुछ युवकों ने पुरस्कार के लोभ में जयचन्द्र के साथ स्पर्धा की, तो कुछ लोग युवराज के हाथों में हारने का यश पाने के लिए जयचन्द्र से स्पर्धा करके हार गये।

अंत में युवराज जयचन्द्र ने भीड़ को देख दर्प के साथ कहा–"क्या मुझ से स्पर्धा करनेवाला और कोई नहीं?"

तब भीड़ में से माधव आगे आया। दोनों ने खड्ग-युद्ध प्रारंभ किया। प्रेक्षक उन दोनों के रूप, क़द सब एक ही प्रकार देख आश्चर्य में आ गये। जयसिंह और रूपमती को भी आश्चर्य हुआ।

राजा जयसिंह ने इसका रहस्य जानने के लिए खड्ग-युद्ध को रुकवा दिया। इसके बाद माधव को निकट बुलाकर पूछा–"तुम किसके पुत्र हो? तुम्हारा क्या नाम है?" इस पर माधव ने हँसकर उत्तर दिया–

"महाराज! सारी प्रजा आपकी संतान है। इसलिए मुझे भी अपना पुत्र समझिये।"

यह बात सुनते ही रूपमती बेहोश हो गयी। जयसिंह ने रानी को अंतःपुर में पहुँचाकर शुश्रूषा करवायी।

रूपमती जब होश में आयी, तब माधवी तथा उसकी बगल में माधव को देख उसकी ओर हाथ फैला कर चिल्ला उठी–"मेरा बेटा!" माधवी ने माधव को रूपमती की ओर ढकेल दिया।

रूपपती का यह व्यवहार सिवाय माधवी के किसी की समझ में नहीं आया। वह अपने पुत्र को अपने गले लगा कर आनंदबाष्प गिराने लगी।

जयसिंह ने सोचा कि उसकी रानी का मतिभ्रमण हो गया है। इसलिए उसने पूछा–"यह तुम क्या कर रही हो?"

"महाराज, यह हमारा ही पुत्र है। जयचन्द्र और यह जुड़वें बच्चे हैं। मैं यह सोच कर डर गयी थी कि दोनों बच्चे के रहने से राज्य के वास्ते दोनों में खूनखराबी होगी। इसलिए एक बच्चे को माधवी के हाथ देकर कहीं जंगल में छोड़ आने के लिए कहा था। लेकिन वह इतने दिनों बाद आज हमें पुनः मिल गया है।" रूपमती ने समझाया।

इसके बाद माधवी ने राजा जयसिंह को बताया कि उसने उस बच्चे को गुप्त रूप से कैसे पाला-पोसा। जयसिंह ने सोचा कि उसने अपने भाई की हत्या की थी, इसलिए उसके दण्ड स्वरूप उसका पुत्र आज तक अपना बन कर नहीं रहा। यह सोचकर उसने रूपमती से कहा–"रानी, सिंहासन के वास्ते आइंदा खूनखराबी न होगी। मैं इस राज्य को अपने दोनों पुत्रों में बराबर बांट दूंगा।" इन शब्दों के साथ राजा ने शपथ की।

इसपर रूपमती परम प्रसन्न हुई। वह अपने दोनों पुत्रों को देखते आनंद पाने लगी। जयसिंह ने अपने जीवनकाल में ही अपने राज्य को दोनों पुत्रों के बीच बराबर बांट कर दोनों का राज्याभिषेक किया।

ईमानदारी का फल

एक गाँव में गोकुलदास नामक एक गरीब आदमी था। उसकी अधेड़ उम्र में एक बच्चा हुआ। उसका नाम रामदास रखा गया। रामदास जब बारह साल का हुआ, तब तक गोकुलदास बूढ़ा हो चुका था। उसके सर सौ रुपये का कर्ज भी था।

रामदास ने अपने पिता से कहा– "पिताजी, अब तुम मेहनत न करो। मैं कहीं जाकर धन कमाता हूँ।" ये शब्द कहकर वह दूसरे गाँव में गया, जो भी काम मिला, करते थोड़ा-बहुत धन कमाने लगा।

रामदास को एक बूढ़ी ने अपने घर आश्रय दिया। रामदास ने अपनी इमानदारी से बुढ़िया को प्रसन्न किया। बुढ़िया उसे अपने बेटे की तरह मानने लगी।

एक बार बूढ़ी ने रामदास से कहा– "बेटा, तुम हर किसी पर विश्वास मत करो। नये आदमी की तीन बार परीक्षा लेकर ही उस पर विश्वास करो। मैंने तुम्हारी ऐसी ही परीक्षा ली थी। धन के मामले में सावधान रहना चाहिये।"

रामदास मजूरी करके जो कुछ कमाता, उसे एक मिट्टी के छोटे बर्तन में डाल छप्पर के छेद में छिपा रखता था। जब तब बर्तन निकालकर पैसे गिन लेता और फिर उसे उसी जगह रख देता।

एक बार बूढ़ी अपनी बेटी के घर चली गयी। घर में रामदास अकेला था। वह मिट्टी के बर्तन के पैसों को गिन कर खाने जा रहा था। तब किसी की आवाज़ उसे सुनाई दी–"माई, भूख से मरा जा रहा हूँ। खाना खिलाओ।" रामदास ने भिखारी को थोड़ा खाना लाकर दिया।

भिखारी ने रामदास से कहा–"मालिक, मैं गाँव-गाँव घूमकर भीख माँगनेवाला भिखमँगा हूँ। मुझे आज रात को बरामदे में

राजीव सक्सेना

सोने दो तो कल सुबह उठकर मैं अपने रास्ते चलता बनूंगा।"

रामदास ने भिखारी को बरामदे में सोने की अनुमति दी। तब उसे बूढ़ी की चेतावनी याद आयी। नये आदमी की तीन बार परीक्षा लेकर ही उस पर विश्वास करना चाहिये। पैसे के मामले में तो बिलकुल विश्वास नहीं करना चाहिये। भिखमँगा तो नया आदमी है।

रामदास ने पैसेवाला बर्तन रसोई घर के एक कोने में रख दिया। रसोई घर का किवाड़ बंद किया, तब वह आगे के कमरे में पहुँचकर लेट गया। बाहर बरामदे में लेटा हुआ आदमी सचमुच चोर था। उसकी झोली के नीचे चुराये गये गहने थे। भिखारी ने रामदास को पैसे गिनकर मिट्टी के बर्तन में डालते देख लिया था।

आधी रात के क़रीब चोर उठा। घर के पिछवाड़े में जाकर रसोई घर में सेंध लगाया और वह भीतर घुस पड़ा। भीतर पहुँचते ही चोर की नाक और आँखों में धुआँ फैल गया और वह खांसने लगा। रामदास ने सोने के लिए जाने के पहले चूल्हे में लाल मिर्च तथा भूसा डाल दिया था। उसका धुआ सारे रसोई घर में फैल गया था।

चोर के सेंध लगाते जो आहट हुई, उसे सुनकर रामदास जाग पड़ा। वह तुरंत रसोई घर में गया। चोर पैसे का बर्तन उठा कर सेंध से बाहर खिसक रहा था। रामदास ने उसके पैर पकड़कर भीतर खींच लिया और एक रस्से से उसके हाथ-पैर बाँध दिये।

इसके बाद अड़ोस-पड़ोसवालों ने आकर चोर को गाँव के मुखिये के हाथ सौंप दिया। चोर की झोली में गाँव वालों के कई गहने मिल गये। जिन लोगों के गहने चोरी गये थे, उन सबने आकर रामदास को इनाम दिये। इस तरह जो इनाम मिले, उस धन से रामदास ने अपने पिता के सौ रुपये का कर्ज चुकाया और वह आराम से अपने शेष दिन बिताने लगा।
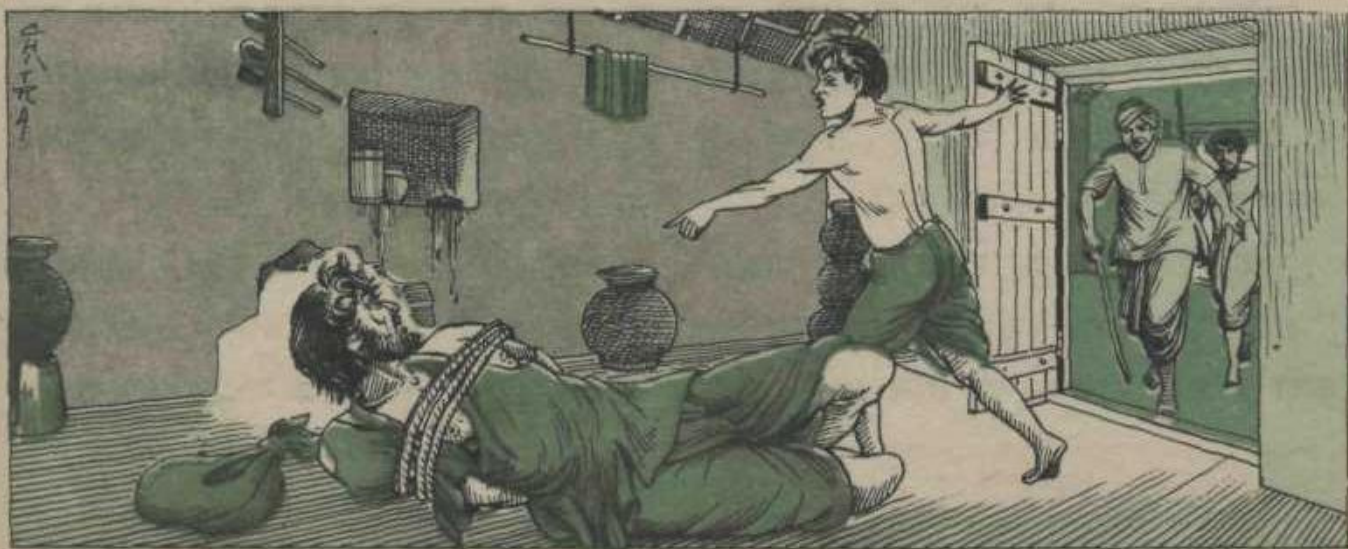
एक दिन का सुलतान

[३]

अबू अल हसन के मन में अब पूर्ण रूप से यह विश्वास जम गया कि वह खुद खलीफ़ा ही है। वह जिस भोजनालय में बैठा था, वह सोने के रंग-बिरंगी पर्दों, कालिनों, तरह-तरह के दीपकों की रोशनी से अद्भुत दिख रहा था। कमरे के मध्य भाग में सात सोने की थालियों में तरह-तरह के मांस-पदार्थ सजाये गये थे। उनके बाज़ू में सात सुंदरियाँ पंखें लिये खड़ी थीं। सारे कमरे में अगर बत्तियों तथा धूप की ख़ुशबू फैली हुई थी।

हसन ने कल दुपहर के भोजन के बाद कुछ खाया न था। इसलिए उसे बड़ी ज़ोर की भूख लगी थी। वह थालियों के सामने जा बैठा। तुरंत सात युवतियाँ पंखे झलने लगीं। हसन को खाना खाते वक़्त, ज्यादा हवा की जरूरत न थी। इसलिए उसने सिर्फ़ एक नीग्रो युवती को पंखा झलने का आदेश दिया, बाक़ी युवतियों को अपने सामने अर्ध चन्द्राकृति में बैठने का आदेश दे उन्हें देखते हुए वह खाना खाने लगा।

खाना समाप्त होते ही हिजड़ों ने हाथ धोने के लिए पानी ला दिया और एक दूसरे कमरे में जाने का रास्ता दिखाया। यह कमरा भोजनालय से भी अधिक सुंदर और आकर्षक था। वहाँ पर सात प्रकार के फल सजाये गये थे। सात सुंदर युवतियाँ खड़ी थीं। हसन ने सब प्रकार के फलों को चखा और तीसरे कमरे में चला गया।

वहाँ पर सुंदर बोतलों तथा सोने की सुराहियों में अद्भुत पेय रखे गये थे। उन्हें हसन के हाथ देने के लिए कई

सुंदरियाँ तैयार खड़ी थीं। हसन ने उन सब युवतियों को अपने चारों तरफ़ बैठने की आज्ञा दी और उनके हाथों से शराब लेकर पीने लगा। उनमें से एक युवती ने नशीली दवा मिलायी गयी शराब हसन के हाथ थमा दी। उसे पीते ही हसन बेहोश हो नीचे गिर पड़ा।

अब तक पर्दों के पीछे छिपकर हसन की करतूतों को देख खुश होनेवाला खलीफ़ा बाहर आया। उसने गुलामों को बुलाकर हसन के बदन मे राजसी पोशाकों को उतारने तथा उसकी असली पोशाकें पहनाने का आदेश दिया। इसके बाद खलीफ़ा ने पिछले दिन हसन को राजमहल में पहुँचाने वाले गुलाम को बुलाकर कहा–"तुम जल्द इस आदमी को इसके घर लिटाकर लौट आओ।" गुलाम ने तुरंत खलीफ़ा के आदेश का पालन किया। इस बार गुलाम ने हसन के घर के किवाड़ बंद कर दिये।

हसन दूसरे दिन दुपहर तक होश-हवास खोकर सोता रहा। तब तक उसका नशा उतर गया था। इसलिए वह होश में आ गया। मगर उसने आँखें खोले बिना उन सब को याद किया जिन्हें उसने पिछली रात को देखा था। उन सबके नाम ले लेकर पुकारा, मगर किसी को पास न आते देख गुस्से में आकर उसने आँखें खोलीं।

तब उसे मालूम हुआ कि वह राजमहल में नहीं है, बल्कि अपने ही घर में है। उसने सोचा कि शायद उसने सपना देखा

है, फिर वह चिल्ला उठा–"जफ़र! मनशूर, तुम कहाँ हो?"

ये चिल्लाहटें सुनकर हसन की माँ दौड़कर आयी और बड़ी आतुरता के साथ बोली–"बेटा अबू अल हसन, तुम्हें क्या हुआ? सपना तो नहीं देखा?"

"अरी बूढ़ी, तुम कौन हो? यह अबू अल हसन कौन है?" हसन ने पूछा।

"अरे, तुम्हीं अबू अल हसन हो, मैं तुम्हारी माँ जो हूँ। तुम मुझे पहचानते क्यों नहीं? तुम्हारी बातें तो मुझे बड़ी अजीब लगती हैं।" हसन की माँ ने कहा।

"अरी बूढ़ी, जानती हो, तुम किससे बात करती हो? मैं खलीफ़ा हारू नल रशीद हूँ। इस दुनियाँ में अल्लाह का प्रतिनिधि हूँ। जाओ बाहर।" हसन डांट बैठा।

हसन की माँ घबराते हुए बोली–"अरे, ये बेमतलब की बातें क्या करते हो? तुम ज़ोर से चिल्लाओगे तो अगल-बगल वाले सुन लेंगे। फिर क्या, हमारा घर ही डूब जायगा। कहीं खलीफ़ा के कानों में ये बातें पड़ गयी हों तो? तुम्हारा पुत्र होगा। शांत हो जाओ, बेटा!"

हसन और ज़ोर से चिल्लाते हुए बोला–"अरी बूढ़ी औरत! मैंने कहा, तुम बाहर चली जाओ। तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया कि तुम अपने को मेरी माँ बताती हो? मैं हारूनल रशीद हूँ और पूरब-पच्छिम का शासक हूँ।"

हसन की माँ सर पीटते हुए बोली–"अरे, तुम में शैतान ने प्रवेश किया है। अल्लाह ही तुम्हें बचावे। तुम्हारा दिमाग आखिर खराब क्यों हो गया? तुम अपनी पैदाइश से लेकर मेरे ही पास तो हो। इसी घर में तुम पले। थोड़ा ठण्डा पानी पी लो, नींद का नशा उतर जायगा।"

बूढ़ी के हाथ से पानी पीकर अपने मन में गुनगुनाने लगा–"शायद हो सकता है कि मैं अबू अल हसन ही हूँ। यही मेरा कमरा है। तुम मेरी माँ हो! मुझ पर किसीने जादू का प्रयोग किया है।"

हसन की माँ अपने नेत्रों से आनंदबाष्प पोंछते सोचने लगी कि उसका मन चंगा हो गया है। तब मह रसोई जाने के पहले यह जानना चाहती थी कि उसके बेटे ने कैसा सपना देखा है। तभी हसन चारपाई पर से नीचे कूद पड़ा और अपनी माँ को पकड़ कर झकझोरते हुए बोला–"अरी, दगाबाजिन, तुम यह न बताओगी कि मेरे किन दुश्मनों ने मेरा राज्य छीनकर मुझे इस गंदी कोठरी में डाल दिया है? फिर मैं गद्दी पर बैठ जाऊँगा तो मेरी नाराजगी की सीमा न रहेगी। ख़बरदार! खलीफ़ा का गुस्सा कैसा होता है, इसे मत भूलो। यह षड़यंत्र करनेवालों को खलीफ़ा कभी माफ़ नहीं कर सकता।" इसके बाद हसन बूढ़ी को छोड़ फिर चारपाई पर जा बैठा। उसकी माँ दहाड़े मार कर रोने लगी। थोड़ी देर बाद वह उठकर चली गयी और गुलाब जल मिला शरबत लाकर हसन को पिलाया।

इसके बाद उसने अपने पुत्र के मन के विचारों को बदलने के ख़्याल से बोली–"बेटा, कल एक तमाशा हो गया। तुम सुनोगे तो खुश हो जाओगे। कल सिपाहियों ने आकर हमारे मुहल्ले के अधिकारी को तथा उसके दो कर्मचारियों को बन्दी बनाया और हर एक को चार चार सौ कोड़े जमा दिये। फिर ऊँट पर बिठाकर सारे मुहल्ले में उनका जुलूस निकाला तब उन्हें फांसी के तख़्ते पर चढ़ाया।"

ये बातें सुनने पर हसन शांत होने के बदले क्रोध में आ गया और बोला–"अरी पापिन, तुम ही यह साबित कर रही हो कि मैं भूल नहीं कर बैठा हूँ। उन तीनों को सज़ा देने के लिए मैं ने ही अहमद को भेजा था। अब अपने मुंह से यह मत कहो कि मैं सपना देख रहा हूँ और मुझ में शैतान बैठा है। मेरे सामने साष्टांग गिर कर अपनी भूल के लिए माफ़ी मांग लो।"

हसन के मुंह से ये बातें सुनने पर उसकी माँ ने निर्णय कर लिया कि हसन पागल हो गया है। वह छाती पीटते हुए बोली–"अल्लाह ही मेहर्बानी करके तुम्हारे पागलपन को दूर करे। तुम आइंदा खलीफ़ा का नाम मत लो। यह भूल से ही न बताओ कि तुम्हीं खलीफ़ा हो। अड़ोस-पड़ोसवालों ने जाकर यह बात खलीफ़ा से बतला दी तो फिर क्या वे राजमहल के सामने तुम्हें फांसी पर लटकवा देंगे।"

ये बातें सुनने पर हसन का क्रोध और भड़क उठा। कोने में रखी हुई लाठी लेकर डांट बैठा–"मुझे अबू अल हसन मत पुकारो। मैं खलीफ़ा हारूनल रशीद हूँ। यदि तुमने न माना तो, तुम्हें इस लाठी से मार बैठूंगा।"

बेटे के मुंह से ये बातें सुन उसकी माँ का क्रोध और दुख भी उमड़ पड़े।

फिर भी उसने बड़े ही शांत स्वर में कहा–"बेटा, तुम्हारा दिमाग कैसे खराब हो गया? तुम्हें अपने को खलीफ़ा बताना कैसा पाप है। उल्टे अपराध भी है। उनके प्रति कृतघ्नता भी होगी। कल ही खलीफ़ा ने मेरे पास एक हज़ार दीनार भेजे।"

हसन के मन में अपने खलीफ़ा होने में जो थोड़ी बहुत शंका थी, इस बात से बिलकुल जाती रही। क्योंकि पिछले दिन उसीने उस बूढ़ी के नाम एक हज़ार दीनार भेज थे।

हसन अपनी माँ की ओर आँखें तरेर कर देखते हुए बोला–"क्या तुम इस बात से इनकार करती हो कि वे दीनार मैंने नहीं
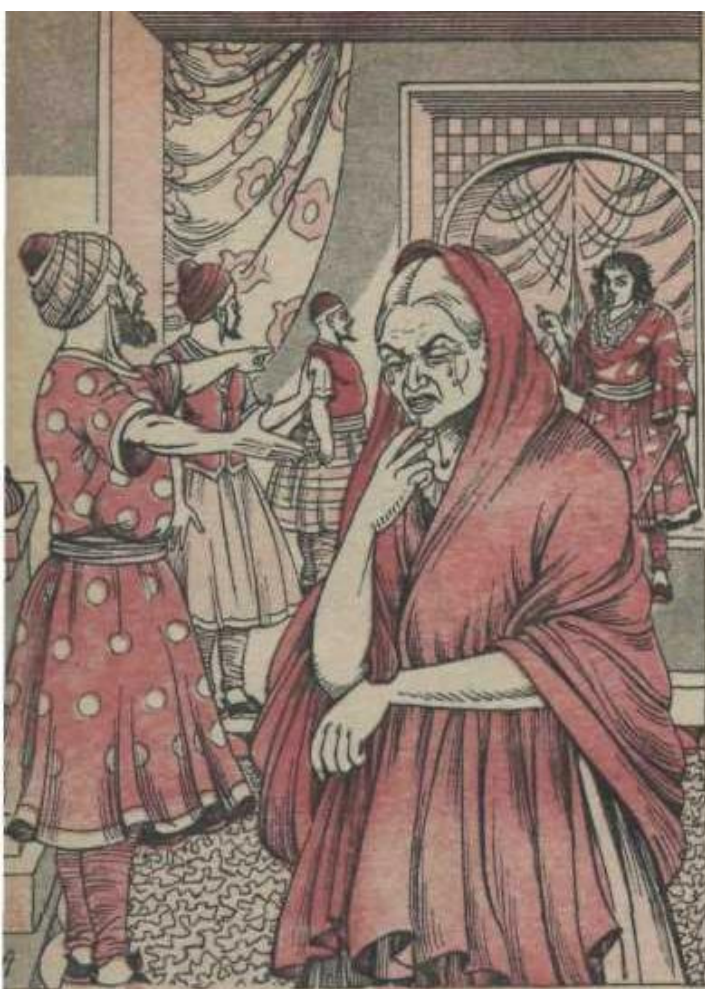
भेजे? जो दीनारे लाया था, वह मेरी आज्ञा से क्या नहीं लाया था? अब भी तुम मुझे अबू अल हसन बताने की कैसी हिम्मत रखती हो?" इन शब्दों के साथ वह लाठी से अपनी माँ को पीटने लगा।

उन मारों से बूढ़ी का मातृप्रेम लुप्त हो गया। उसने चिल्ला चिल्ला कर अड़ोस-पड़ोसवालों को पुकारा। जल्द ही अगल-बगल से कुछ लोग दौड़ कर आये और हसन की माँ को पिटने से बचाया। हसन के हाथ से लाठी छीनकर उसके हाथ बाँध दिये और तब उसे समझाया-"अरे हसन, तुम क्या पागल तो नहीं हो गये? अपनी ही माँ पर हाथ उठाते हो? कुरान में तुमने जो कुछ पढ़ा क्या वह सब भूल गये?"

हसन जोर से चीख उठा-"अबू अल हसन कौन है? क्या मुझे उस नाम से पुकारोगे?"

पड़ोसवालों ने अचरज में आकर पूछा-"क्या तुम अबू अल हसन नहीं हो? यह बूढ़ी तुम्हारा जन्म देनेवाली माँ नहीं है।"

"अबे गधे, तुम लोग यहाँ से भाग जाओ। मैं तुम लोगों का बादशाह हूँ। मैं खलीफ़ा हारूनल रशीद हूँ।" हसन चिल्ला पड़ा।

पड़ोसवालों को विश्वास हो गया कि हसन बिलकुल पागल है। उस हालत में उसको स्वेच्छापूर्वक रहने देना खतरनाक समझकर उसके हाथ-पैर बांध दिये और पागलखाने को खबर कर दी। एक घंटे के अन्दर पागलखाने का अधिकारी दो सिपाहियों के साथ आ पहुँचा। उसके हाथों में हथकड़ियाँ-जंजीरें तथा कोड़े थे।

उन्हें देखते ही हसन खींचा-तानी करने लगा। इसपर पागलखाने के अधिकारी ने हसन की पीठ पर दो-चार कोड़े जमा दिये। हसन अपने को खलीफ़ा बता रहा था। फिर भी उसकी अनसुनी करके सिपाही उसे पागलखाने में खींच कर ले गये और पहली किश्त में पाचास कीड़े लगाये।

दस दिन तक सुबह-शाम इसी प्रकार कोड़े मारने के बाद हसन की विचारधारा में परिवर्तन आया।

इस बीच हसन सोचने लगा–"मेरी बड़ी बुरी हालत हो गयी हैं। अब कोई मुझे पागल समझते हैं तो इसकी भूल मेरी ही होगी। शायद मैंने सपना देखा हो कि मैं राजमहल में था। मगर मुझे वे दृश्य सपने जैसे प्रतीत नहीं होते। इस माया को समझने का प्रयत्न करूँ तो सचमुच मैं पागल हो जाऊँगा। अल्लाह ने न मालूम ऐसी कितनी मायाओं की सृष्टि की हो।"

हसन यों सोच ही रहा था, तब उसकी माँ रोते हुए उसे देखने आ पहुँची। उसकी बुरी हालत देख बूढ़ी का कलेजा पसीज उठा। वह अपने दुख को दबाते हुए बोली–"बेटा अबू अल हसन, तुम कैसे हो?"

"माँ! अल्लाह तुम्हारी रक्षा करें।" हसन ने शांत स्वर में उत्तर दिया।

बूढ़ी खुशी से फूल उठी और बोली– "बेटा, अल्लाह की मेहर्बानी से तुम्हारा मन चंगा हो गया है।"

"माँ, मैं तुम से और अल्लाह से माफ़ी मांगता हूँ। मेरी समझ में नहीं आता, कि मैं पागल की तरह क्यों बक गया था। शैतान ने मुझ में प्रवेश करके शायद वैसा मुझ से बोलवाया होगा। लेकिन अब मैं चंगा हो गया हूँ।" हसन ने कहा।

"बेटा, मुझे इस वक़्त, ऐसी खुशी हो रही है कि मैंने फिर से तुम्हारा जन्म दिया है।" हसन की माँ ने कहा।

हसन की माँ के कहने पर पागलखाने के अधिकारी ने हसन की जांच की, उसे पूरा इस बात का विश्वास हो जाने पर कि हसन का पागलपन दूर हो गया है, उसे पागलखाने से घर भेजा दिया गया। वह लडखड़ाते अपनी माँ के साथ चल कर घर पहुँचा, मगर कोड़ों की मार से स्वस्थ होने में उसे कई दिन तक चारपाई में ही रहना पड़ा। (और है)

उफ़!

एक गाँव में एक गरीब विधवा थी। उसके विक्रम नामक एक लड़का था। वह अव्वल दर्जे का हठी और सुस्त था।

एक दिन माँ ने अपने बेटे से कहा– "बेटे, सूखी लकड़ी बीन ला दो, मैं रोटियाँ बना देती हूँ।"

"माँ, रोटी बनाने की क्या ज़रूरत है? कच्चा आटा खा ले तो काम चल जायगा न?" विक्रम ने कहा। क्योंकि वह बड़ा ही सुस्त था और काम करने से घबराता था।

लड़की की माँ ने सोचा कि अपने बेटे से काम लेना मुश्किल है, इसलिए वह जंगल में गयी, लकड़ियाँ बीनकर घर लौटने लगी। रास्ते में एक कुआँ पड़ता था। औरत ने कुएँ की जगत पर लकड़ी का गट्ठर रख दिया और थकावट से परेशान होने के कारण बोल उठी–"उफ़!" दूसरे ही क्षण कुएँ में मे एक राक्षस बाहर निकल आया और उसने बूढ़ी से पूछा– "बूढ़ी माई, तुमने मुझे क्यों पुकारा?"

विधवा ने राक्षस को देखा तो घबरा गयी, उसने काँपते हुए कहा–"नहीं भाई, मैंने तुम्हें नहीं पुकारा।"

"तुमने मुझे क्यों नहीं बुलाया? 'उफ़' तो मेरा ही नाम है।" राक्षस ने कहा।

"मैं यह बात नहीं जानती थी। मेरे तो एक जवान लड़का है, मगर वह काम-वाम नहीं करता, फिर भी मुझे ही मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए थक कर मैं मन ही मन बोल पड़ी–"उफ़!" इन शब्दों के साथ विधवा ने राक्षस को अपने पुत्र का सारा समाचार कह सुनाया।

सारी कहानी सुनकर राक्षस ने कहा– "तुम अपने पुत्र को मेरे पास भेज दो। मैं उसको होशियार बना दूंगा। तुम्हें अंजुली भर सोना दे दूँगा।"

विमला राय

"तुम तो उसे खा नहीं जाओगे न? तुमको देखने से मुझे डर लगता है।" विधवा ने कहा।

"मैं मनुष्य का माँस नहीं खाता।" ये शब्द कहते राक्षस कुएँ में कूद पड़ा, थोड़ी देर बाद बाहर आकर विधवा के हाथ अंजुली-भर सोने की मुद्राएँ देते हुए बोला– "याद रखो, तुम अपने पुत्र को ले न आओगी तो तुम दोनों के प्राण ले लूँगा।"

विधवा लकड़ी लेकर घर पहुंची, रोटी बनाते हुए आँसू पोंछने लगी। इसे देख विक्रम ने पूछा–"माँ, तुम रोती क्यों हो?" विधवा ने विक्रम को सारा वृत्तांत कह सुनाया।

विक्रम ने कहा–"माँ, तुम चिंता क्यों करती हो? मैं उस राक्षस के पास जाकर होशियार बन जाऊँगा न?"

इसके बाद माँ-बेटे दोनों कुएँ के पास पहुँचे। विधवा ने कुएँ में झाँककर पुकारा– "उफ़! उफ़!"

तुरंत राक्षस कुएँ से बाहर आया और विधवा से पूछा–"बूढ़ी माँ, क्या यही तुम्हारा बेटा है!" इस के बाद राक्षस ने विधवा को एक और अंजुली-भर सोना दिया, तब विक्रम से कहा–"भाई, तुम मेरे साथ मेरे घर आओ। तुम्हें घर साफ़ करने का काम करना होगा। मैं सारा

दिन घर पर नहीं रहूँगा। तुम्हें आराम ही आराम है, समझें!"

"बस, इससे बढ़कर मुझे चाहिए ही क्या!" विक्रम ने कहा।

फिर क्या था, राक्षस और विक्रम कुएँ में कूद पड़े। कुएँ के तल में एक सुंदर राजमहल तथा एक उद्यान भी थे।

वहाँ पहुँचने पर राक्षस ने विक्रम से कहा–"मैं बाहर जा रहा हूँ। तुम घर की रखवाली करो। खाओ, पिओ, पिछवाड़े में घूमो, लेकिन बगीचे में मत जाओ। यदि तुम बगीचे में जाओगे तो फूल मुझे खबर देंगे, तब मैं तुमको पीटूँगा।" एक कमरे में खाना परोसा गया था।

विक्रम ने भर पेट खाना खाया और मन में सोचा–"यह नौकरी तो मुझे बड़ी पसंद आयी।" वह थोड़ी देर तक पिछवाड़े में घूमता रहा, आखिर बगीचे का दर्वाज़ा खोल उसमें क़दम रखा।

बगीचे में सब प्रकार के फूल और पक्षी भी थे। पक्षी गा रहे थे, फूलों से तरह-तरह की महक फैल रही थी।

विक्रम ने मन में सोचा–"बगीचे में मैं रोज यहीं आया करूँगा।"

विक्रम एक जगह खड़े हो चारों तरफ़ देख रहा था। उसे एक कोने में एक कुटी दिखाई दी। कुटी के द्वार पर एक सुंदर कन्या खड़े हो उसे बुला रही थी।

"ख़बरदार! फूलों को तुमने छू लिया, तो वे उफ़ से कह देंगे। आओ, तुम्हें एक बात बतानी है।" उस कन्या ने कहा।

विक्रम सावधानी से कुटी के पास पहुँचा।

"तुम यहाँ पर क्यों आये? यह बात सच है कि उफ़ मनुष्यों को तो नहीं खाता, मगर वह माँस खाता है। अगर उसे कहीं खाने को माँस न मिला तो घर लौटकर तुम्हें एक तरह का पानी पिलायगा। तब तुमसे पूछेगा कि तुम अंगडाइयाँ लो। यदि तुमने उसकी बातों में आकर अंगडाइयाँ लीं तो तुम वह जानवर बन जाओगे, उफ़ तुम्हें जिस जानवर के बन जाने की कामना करेगा। इसलिए यदि कभी ऐसी हालत आ गयी तो पानी पिओ, हाथ-पैर हिलाओ, गोल चक्कर बनाओ, मगर अंगड़ाइयाँ न लो। आखिर खीझकर उफ़ मुझसे लाल जल मँगवा देगा, तुम से पिला कर अमुक जानवर बन जाने को कहेगा। लेकिन वह लाल जल अद्भुत शक्तियाँ रखता है। उसके पीने पर तुम्हें अपार ज्ञान प्राप्त होगा। उसके पीने पर ज्ञानोदय होगा, तुम जिस रूप को पाना चाहते हो, उस रूप को पा सकोगे। पक्षी बन कर यहाँ से भाग भी सकते हो। यहाँ से भाग जाने के बाद मुझे भी छुड़ाने का उपाय सोचो। मगर यह बात गुप्त

रखो कि तुमने मुझे देख लिया है। अब जाकर घर की सफ़ाई का काम करो।" कन्या ने विक्रम को समझाया।

विक्रम महल में लौट आया, झाड़ू लेकर साफ़ किया और पिछवाड़े में जाकर एक पेड़ के नीचे आराम करने लगा।

बड़ी देर बाद उफ़ घर लौटा। उसे भूख सता रही थी। उस दिन उफ़ को खाने के लिए सिवाय फलों के कुछ हाथ न लगा था। उस ने घर लौटते ही विक्रम से पूछा–"तुम क्या कर रहे हो?"

"घर साफ़ करके आराम कर रहा हूँ।" विक्रम ने कहा।

"अच्छी बात है! तुम्हें थोड़ी देर पढ़ाता हूँ। यह पानी पीकर अंगड़ाइयाँ लेकर खरगोश बन जाओ।" इन शब्दों के साथ उफ़ ने विक्रम से पानी पिलाया।

विक्रम ने हाथ हिलाये, एक पैर पर खड़ा रह गया।

"धत्! यह तुम क्या करते हो? अंगड़ाइयाँ लो।" उफ़ ने धमकी दी।

"क्या मैं अंगड़ाइयाँ नहीं ले रहा हूँ?" विक्रम ने भोला बन कर पूछा।

"अरे तुम इतने मंदबुद्धिवाले हो!" ये शब्द कहते उफ़ ने एक दूसरे पात्र का जल विक्रम को पिलाया। तब उससे कहा– "तुम अंगड़ाई लेकर बकरी बन जाओ।"
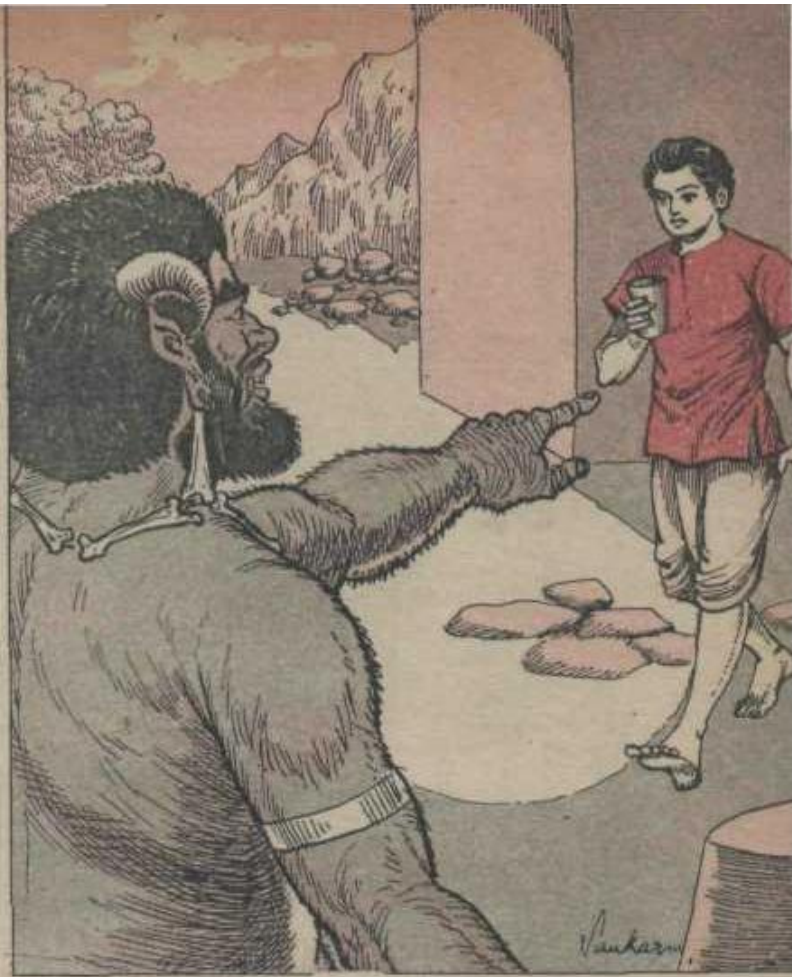
मगर विक्रम ऐसा अभिनय करने लगा कि उसे अंगड़ाई लेना आता ही न हो। उसने शीर्षासन लगाया, मगर अंगड़ाइयाँ न लीं। उफ़ की भूख बढ़ती जा रही थी।

इसके बाद उफ़ बगीचे की कुटी में गया। वहाँ की कन्या से बोला–"आज मुझे माँस नहीं मिला। उस बेवकूफ़ से अंगड़ाइयाँ लेने को कहता हूँ तो नहीं ले रहा है।"

"मूर्ख जैसा लगता है। लाल जल पीने से शायद वह अंगड़ाइयाँ लेना जान सके।" कन्या ने उत्तर दिया।

"लाल जल पीने से वह अक्लमंदी में मेरे बराबर हो जायगा न?" उफ़ ने पूछा।

"अक्लमंद होकर वह कर ही क्या सकता है? अंगड़ाई के लेते ही तुम जैसा जानवर बन जाने को कहोगे, वह जानवर बन जायगा।" कन्या ने कहा।

"यह बात भी ठीक है। आओ, लाल जल जल्दी ले आओ।" उफ़ ने कहा।

वह कन्या कुटी से लाल जल ले आयी। उफ़ एक लोटे में वह जल ले गया, विक्रम के हाथ देकर बोला–"यह पानी पीकर तुम अंगड़ाई ले हिरन बन जाओ।"

विक्रम ने पानी पीकर हिरन के बदले कबूतर बन जाने की कामना की। तुरंत वह कबूतर बन कर कुएँ से होकर ऊपर उड़ गया। उफ़ झट बाज बनकर कबूतर का पीछा करने लगा। बाज कबूतर का पीछा करके पकड़ने को हुआ तब वह तुरंत मक्खी बनकर गुस्लखाने के दर्वाजे पर लगे ताले के छेद में घुस गया।

फिर क्या था, बाज एक अमीर के रूप में बदल गया। गुस्लखाने के मालिक के पास जाकर पूछा–"क्या तुम इसे बेचोगे?"

"उचित मूल्य दे तो क्यों नहीं बेचूंगा?" गुस्लखाने के मालिक ने उत्तर दिया।

अमीर ने गुस्लखाने के मालिक को मुँह माँगा सोना देकर गुस्लखाने की चाभियाँ ले लीं। तब मक्खी बाहर आकर इधर-उधर उड़ने लगी। अमीर ने गवरैया बनकर मक्खी का पीछा किया। मक्खी जब गवरैया के हाथ में पड़नेवाली थी, तब वह राजमहल में घुस गयी और चंपा बनकर राजकुमारी की गोद में गिर पड़ी। राजकुमारी चंपा को देख खुश हुई और उसने उसे अपनी वेणी में गूँथ लिया।

इस बीच गवरैया के रूप में स्थित उफ़ ने तुर्की का राजदूत बनकर राजा के दर्शन किये और कहा–"महाराज, मैं जब अपने देश से निकल रहा था, तब मेरी माँ ने मुझे आशीर्वाद देकर एक चंपा फूल दिया, वह फूल मेरे लिए अत्यंत पवित्र था। एक मैना ने मेरी कोट से उस फूल को खींच ले जाकर राजकुमारी

के महल में गिरा दिया है। आप मेहर्बानी करके वह फूल मुझे वापस दिलाइये।"

इस बीच विक्रम एक सुंदर युवक के रूप में बदल कर बोला-"राजकुमारी, मैं एक देश का राजकुमार हूँ। मेरा एक दुश्मन आकर मुझे माँगेगा। हम दोनों मंत्र-विद्या में बराबर हैं। इसलिए वह मेरा अंत करने की सोच रहा है, तुम्हारा पुण्य होगा, कृपया तुम मुझे उसके हाथ मत सौंपो।" ये बातें कहकर वह फिर चंपा में बदल गया। इतने में एक सखी ने राजकुमारी के पास आकर कहा-"राजकुमारी, आपकी गोद में जो फूल गिरा था, उसे महाराज लाने को कहते हैं।"

राजकुमारी ने खीझकर उत्तर दिया-"हमारे उद्यान में हजारों चंपा फूल हैं। चार फूल तोड़कर महाराजा के हाथ दो।"

सखी ने उद्यान में जाकर पांच-दस चंपा फूल तोड़ लिया और राजदूत के हाथ दिया। राजदूत ने उनकी खुशबू देखकर कहा-"महाराज, मेरा पवित्र फूल तो इनमें नहीं है।"

इस पर राजा ने क्रोध में आकर सखी से कहा-"तुम राजकुमारी से कह दो कि वह तुरंत वह फूल दे दे, वरना मैं खुद आकर उसे ले लूँगा।" सखी ने यह बात
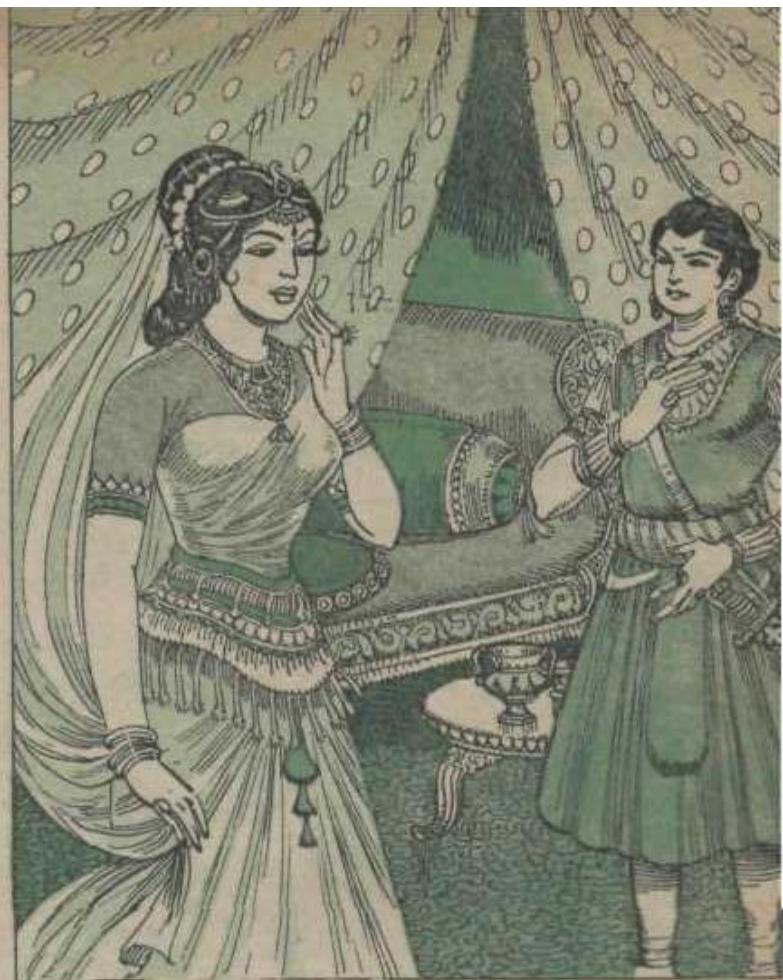
राजकुमारी से कही। राजकुमारी ने लाचार होकर वह फूल सखी के हाथ दिया। राजा वह फूल तुर्की के राजदूत के हाथ देने ही जा रहा था कि वह फूल अनाज का एक दाना बनकर नीचे जा गिरा। तुरंत राजदूत मुर्गी बनकर उसे खाने को हुआ। मौक़ा देख दाना ने सियार बनकर मुर्गी को खा डाला।

ये दृश्य देखनेवाला राजा घबराकर चिल्ला पड़ा-"ओह! यह कैसी आफ़त है!"

उसी वक़्त सियार एक युवक के रूप में बदलकर बोला-"महाराज की जय हो! मैं एक राजकुमार हूँ। मेरी माँ एक गंधर्व नारी है। उसने मुझे सारी मंत्र-

विद्याएँ सिखायी हैं। आपके पास अभी जो व्यक्ति आया था, वंह मेरा सेवक है। उसने मेरी विद्याएँ सीख कर मेरा ही अंत करना चाहा। महराज, क्या जो दूसरों के साथ धोखा देना चाहता है, उसका नाश हुए बिना रह सकता है?"

"ओह! ऐसी बात है, बेटा! अच्छा हुआ कि तुम्हारा दुश्मन मर गया। तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो मेरी पुत्री के साथ विवाह करके मेरे दामाद बन कर यहीं पर रह जाओ।" राजा ने कहा।

"आपकी जो कृपा! पर मुझे एक सप्ताह की अवधि दे तो मैं अपने सारे कार्य पूरा करके लौट आऊँगा।" विक्रम ने जवाब दिया।

राजा के मान लेने पर वह कबूतर के रूप में बदल कर कुएँ के पास पहुँचा। वहाँ पर उसे उसकी माँ दिखाई दी। विक्रम ने अपना असली रूप धारण कर माँ से पूछा-"माँ! यहाँ पर तुम क्या कर रही हो?"

"बेटा, मैं तुम्हारी याद में परेशान थी, इसलिए उफ़ को उसका सोना लौटा कर तुम्हें ले जाने के लिए आयी हूँ।" माँ ने बताया।

"माँ! उफ़ अब रहा ही कहाँ? वह मर गया है। अब हम आराम से रह सकते हैं। तुम घर चली जाओ। मैं जल्दी लौट आता हूँ।" इन शब्दों के साथ विक्रम ने अपनी माँ को घर भेज दिया। तब वह बाज के रूप में कुएँ में उतर गया। बगीचे की कन्या से पूछा-"तुम अपने माँ-बाप के पास जाओगी या मेरे साथ रहोगी?"

उस कन्या ने अपने माँ-बाप के पास जाने की इच्छा प्रकट की। वह भी लाल जल पीकर पक्षी बन गयी। कुएँ से बाहर आकर अपने घर चली गयी।

बाज के रूप में ही विक्रम राजा के पास गया। वहाँ पर अपने असली रूप को प्राप्तकर राजकुमारी के साथ विवाह किया। इस के बाद अपनी माँ को भी राजमहल में बुलाया और वह अपने शेष दिन आराम से बिताने लगा।

अनोखी सूझ

बहुत दिन पहले की बात है। महोबा नामक गाँव में कई धनवान रहा करते थे। उसी गाँव में रामगुप्त नामक एक बनिया था। उसके दो पुत्र थे। बाप-बेटे सब मिल कर छोटा-मोटा व्यापार किया करते थे।

रामगुप्त एक जमाने में बड़ा धनी था। मगर व्यापार में उसने अपना सर्वस्व खो दिया था। अब उसके यहाँ सिवाय एक बड़ा घर के संपत्ति के नाम पर कुछ न था। फिर भी वह निराश नहीं हुआ। इस आशा से उसने पुनः व्यापार शुरू किया कि भविष्य में कभी न कभी उसकी क़िस्मत खुल जायगी। वह बूढ़ा हो चुका था। मगर पहले की हालत में पहुँचने की प्रबल आशा उसके मन में बनी ही रही।

महोबा धनी गाँव था, इसलिए जब-तब लुटेरे उस गाँव पर हमला कर बैठते थे। लुटेरों के आने का समाचार मिलते ही गाँववाले अपनी सारी संपत्ति कहीं गाड़ देते अथवा अपने साथ लेकर दूसरे गाँवों में भाग जाते।

एक बार ऐसी आफ़त उस गाँव में हुई। लुटेरों के आने की खबर मिलते ही सब ने अपने अपने घर खाली कर दिये। मगर रामगुप्त ने अपने बेटों से कहा– "बेटे, मैं तुम लोगों के साथ आ नहीं सकता। दो दिन यहीं-कहीं अपना सर छिपा लूँगा। हमारे पिछवाड़े में पुआल के ढेर में थोड़ी जगह बना कर वहीं पर खाना पानी रख के चल जाओ।"

फिर क़्या था, रामगुप्त के बेटे उसे बड़ी युक्ति के साथ पुआल के ढेर में छिपा कर भाग गये।

लुटेरे गाँव में आ ही गये। लुटेरे सब घर-घर की तलाशी ले रहे थे। उनका नेता

शंभुदास आरोरा

घोड़े पर एक गली से होकर गुजरा। लुटेरों ने जो कुछ लूटा, उसे दो बोरों में भर कर घोड़े पर लाद दिया था। आखिर लुटेरों के नेता की नजर बहुत बड़े मकान और उसके पिछवाड़े पर पड़ी। वह घर और किसीका नहीं, बल्कि रामगुप्त का ही था।

लुटेरों का नेता जब उस घर में घुसा, तब मानों रामगुप्त की जान छटपटा उठी। वह जो कुछ करता था, उसे रामगुप्त बड़ी सावधानी से देखता रहा।

लुटेरों के नेता ने अपने घोड़े को पुआल के ढेर के पास एक पत्थर से बांध दिया और बड़े ही इतमीनान से घर में घुस पड़ा। घोड़े को भूख लगी थी, वह घास चरने लगा।

मौक़ा पाकर रामगुप्त पुआल के ढेर से बाहर आया, घोड़े की पीठ पर से धन के बोरों को उतारा और घोड़े के रस्से को खोल दिया। तब वह उस धन के साथ ढेर के भीतर जा छिपा। रस्सा खुल गया था, इसलिए घोड़ा स्वेच्छापूर्वक दूर जाकर घास चरने लगा।

सारे घर की बड़ी देर तक तलाशी लने पर भी लुटेरों के नेता के हाथ कुछ न लगा। उसने बाहर आकर देखा कि घोड़ा रस्सा तोड़ कर दूर जा घास चर रहा है और उसकी पोठ पर धन की गठरियाँ नहीं हैं।

लुटेरों का नेता यह सोच कर सारे पिछवाड़े में खोज रहा था कि कहीं गठरियाँ

गिर तो नहीं गयी हैं। तभी उसके अनुचर वहाँ आ पहुँचे। उन्हें देखते ही लुटेरों के नेता ने आतुरता के साथ पूछा– "क्या तुम लोगों में से किसी ने घोड़े पर से गठरियाँ निकालीं?"

चोरों ने एक दूसरे के चेहरे देखें। उनके मन में यह संदेह पैदा हो गया कि लूट के माल को छिपा कर वह ऐसा अभिनय कर रहा है। तब सभी लुटेरों ने मिल कर अपने नेता से पूछा–" इस गाँव में हमें छोड़ एक भी प्राणी नहीं है। गठरियाँ तो भारी थीं, कैसे गायब हो सकती हैं?"

इसके बाद सबने गठरियों की खोज की, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। लुटेरों के नेता ने उन गठरियों को खोज निकालने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली।

दूसरे दिन लुटेरे महोबा को छोड़ चले गये। उनके जाने का समाचार मिलते ही गाँव वाले सब फिर गाँव में आ गये। रामगुप्त ने उन गठरियों को अपने ही घर में बडी होशियारी से छिपा रखा था। उसने अपने बेटों से भी यह बात नहीं कही। उसने सुन रखा था कि लुटेरों के नेता ने उन गठरियों की खोज करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है।

रामगुप्त ने जैसे सोचा था, वैसे लुटेरों का नेता अपने को घोड़ों का व्यापारी बताते उस गाँव में आया और वह गाँव के अमीरों के बारे में पूछ-ताछ करने लगा।
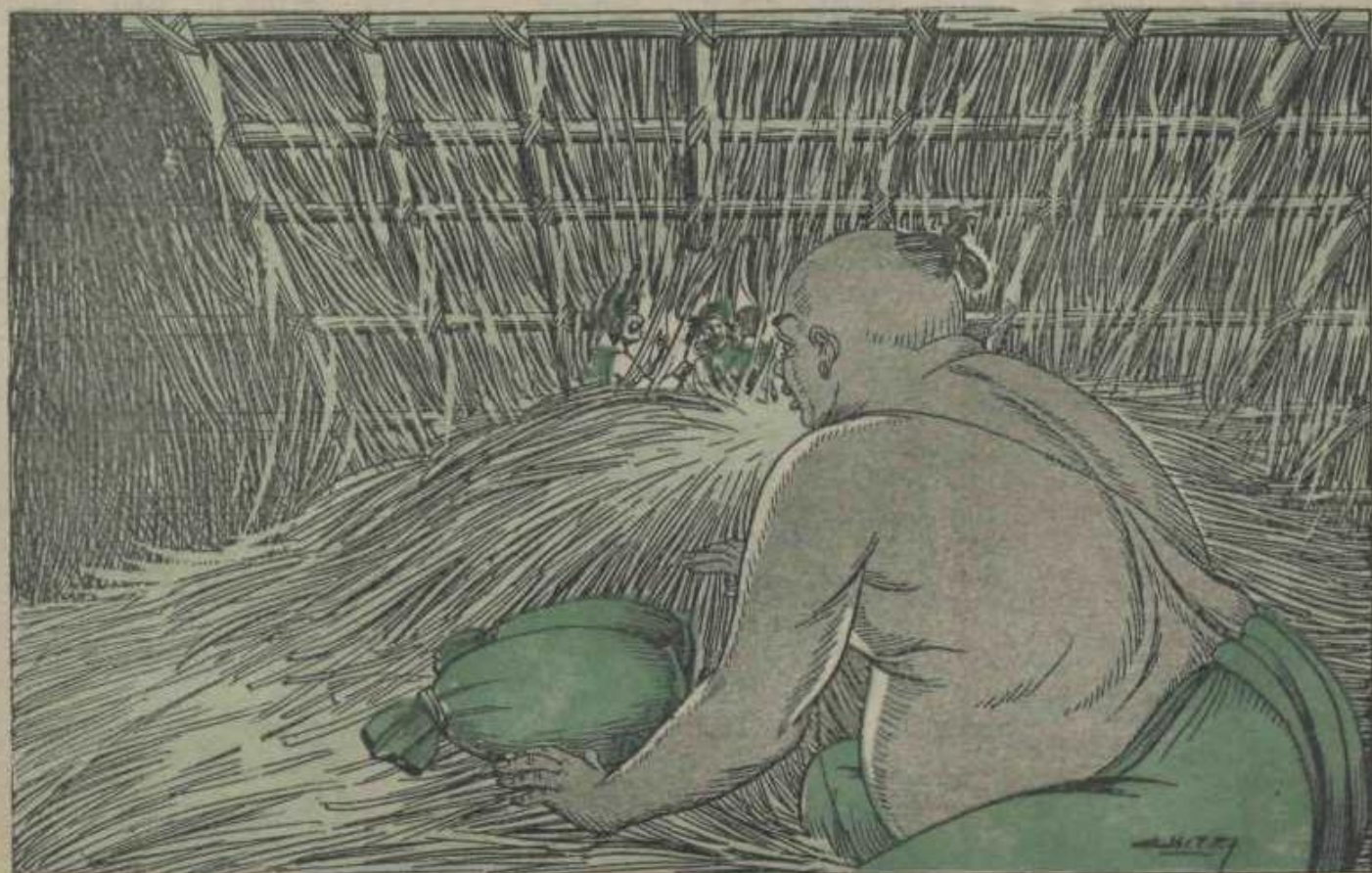
उसका उद्देश्य था कि हाल ही में अचानक जो धनवान बन गया हो, उसका पता लगा ले। रामगुप्त ने उसे देखते ही पहचान लिया।

रामगुप्त को संदेह हुआ कि चोर उसके घर उस रात को आ सकता है। इसलिए वह अपने पिछवाड़े पर बड़ी सावधानी से निगरानी रखे हुए था। उसकी शंका के अनुसार अंधेरे के फैलते ही लुटेरों का नेता चुपके से पिछवाड़े में घुस गया और घर की दीवार के पास दुबक कर बैठ गया। उसका विचार था कि घरवाले यदि धन के बारे में बातचीत कर ले तो सुने।

यह सब देखने वाले रामगुप्त ने अपने बेटों को बुला कर ऊँची आवाज़ में इस तरह कहा जिससे चोर भी सुन ले–" बेटे, परसों में पुआल के ढेर से सूखी घास खींच रहा था तो घास के नीचे गहनों की दो गठरियाँ मिल गयीं।"

रामगुप्त के बेटों ने आश्चर्य में आकर पूछा–"ऐसी बात है! तब तो आपने हमें बताया तक नहीं?"

"बेटे, वे गठरियाँ किसकी हैं, क्या हैं? जाने बिना मैं कैसे बताता! इसलिए मैंने उन गठरियों को फिलहाल गुप्त रूप से छिपा रखा है।" रामगुप्त ने कहा।

"कहाँ पर छिपा रखा है?" बेटों ने रामगुप्त से पूछा।

"हमारे कुएँ में डाल दिया है।" रामगुप्त ने जवाब दिया।

"लुटेरों का नेता यह बात सुनकर बड़ा खुश हुआ। सब के सो जाने पर चोर एक रस्सी लाया, उसे चक्री से बाँध कर उसकी मदद से कुएँ में उतर पड़ा।

तुरंत रामगुप्त ने अपने बेटों को असली बात बता दी। तीनों ने जाकर रस्से को काट डाला। चोर के सर पर पत्थर फेंककर उसे मार डाला। फिर बाहर निकाल कर उसकी लाश को पिछवाड़े में ही गाड़ दिया।

इसके बाद रामगुप्त जिंदगी भर धनी बन कर रहा।

विराट राजा ने जब सुना कि कौरव सेनाओं को पराजित करके गायों को लौटाने में किसी देवता ने उत्तर की सहायता की है, तब उसने कहा–" मेरा ऐसा महान उपकार करनेवाला देवता कौन है? उन्हें देख उनकी पूजा करने की मेरी इच्छा हो रही है।"

इसपर उत्तर ने जवाब दिया–" वह देवकुमार वहीं पर अंतर्धान हो गया है। कल या परसों वे हमें दर्शन देनेवाले हैं।" मगर राजा विराट यह नहीं जानता था कि वह देवकुमार नपुंसक के रूप में उसके सामने ही उपस्थित है।

विराट की अनुमति पाकर अर्जुन ने कुछ वीरों की पगड़ियों को राजकुमारी उत्तरा को दे दिया। उन्हें देख वह बहुत ही प्रसन्न हो गयी। इसके बाद युधिष्ठिर, अर्जुन तथा उत्तर ने एकांत में आगे के कार्यक्रम पर विचार किया।

तीसरे दिन पांचों पांडव सुंदर वस्त्र धारण करके राजा विराट के दरबार में आये। वे सब राजाओं के बैठनेवाले आसनों पर विराजमान हो गये।

थोड़ी देर बाद राजा विराट दरबार में आये। वे पांडवों को राजाओं के आसनों पर बैठे देख क्रोध में आकर युधिष्ठिर से बोले–" कंक, तुमको मैंने अपने साथ जुआ खेलने के लिए दरबार में स्थान दिया तो तुम सिंहासन पर ही बैठ गये?"

४३. उत्तरा का विवाह
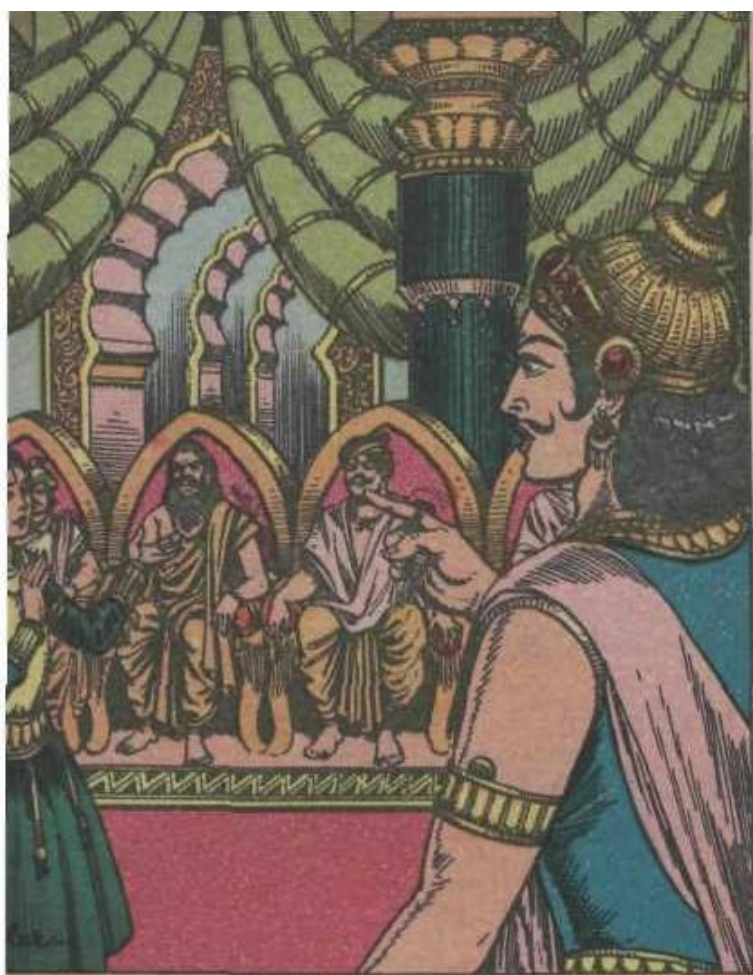
अर्जुन ने इस प्रकार आश्चर्य प्रकट किया, मानों राजा विराट उसके साथ परिहास कर रहे हो, उसने कहा-"राजन्, ये महानुभाव इन्द्र के अर्धासन पर बैठने योग्य हैं! ये धर्म के अवतार हैं, राजर्षि हैं, महान शक्तिशाली हैं। मनु जैसे जगत की रक्षा करनेवाले हैं। ये जब कुरु देश पर शासन करेंगे, तब इनके पीछे दस हज़ार हाथी, तथा तीस हज़ार रथ होंगे। शकुनि, कर्ण इत्यादि का समर्थन प्राप्त दुर्योधन भी इनकी शक्ति की कल्पना करके घबरा जायेंगे। ऐसी हालत में क्या ये इस छोटे से सिंहासन पर बैठने योग्य न होंगे?"

इस पर राजा विराट आश्चर्य प्रकट करते हुए बोला-"क्या ये महानुभाव कुंतीदेवी के ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर हैं? तब तो इनके छोटे भाई भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव कहाँ हैं? द्रौपदी कहाँ?"

इसपर अर्जुन ने राजा विराट को समझाया-"वल्लव नाम से आप के यहाँ जो रसोइया है, वही भीम हैं। गंधर्वों को पराजित कर सौगंधिक पुष्प लानेवाले तथा कीचक का वध करनेवाले गंधर्व भी ये ही हैं। क्या यह काम और किसी के द्वारा हो सकता था? आपके घोड़ों की देख भाल करनेवाला व्यक्ति नकुल है। गायों की रक्षा करनेवाला सहदेव है। आपके अंत:पुर में रहनेवाली सैरंध्री ही द्रौपदी हैं। मैं अर्जुन हूँ। राजन! आपकी छत्रछाया में हमारा अज्ञातवास सुख के साथ समाप्त हो गया है।"

पांडवों का परिचय प्राप्त होने के बाद युद्ध में अर्जुन नें जो पराक्रम दिखाया, उसका वर्णन करके उत्तर ने यों बताया- "महाराज, सिंह जिस प्रकार हिरणों का पीछा करके उन्हें मार देता है, वैसे अर्जुन ने कौरव योद्धाओं का शिकार किया। मैंने इस महानुभाव को एक ही बाण द्वारा हाथी को मारते देखा है। इनके द्वारा शंख बजाने पर मेरे कान बहरे से हो गये थे।"

"अच्छी बात है, अब हमें पांडवों के साथ मैत्री करनी है। इसलिए हमारी उत्तरा का विवाह अर्जुन के साथ करेंगे।" राजा विराट ने सुझाया।

"महाराज! पहले हमें सभी पांडवों का अभिनंदन करना होगा।" उत्तर ने बताया।

इस पर विराट ने यों कहा–"तुम्हारा कहना बिलकुल सही है। युद्ध में हार कर मैं जब सुशर्मा के हाथ बन्दी हो गया था, तब मुझे छुड़ा कर हमें विजयी बनाने वाले ये ही भीम हैं। पांडवों की सहायता के कारण ही हम विजयी हो गये हैं। इसलिए हमें पांडवों के प्रधान युधिष्ठिर को अपने अनुकूल बना लेना है। हम अनजाने में जो कुछ बक चुके हैं, उसे युधिष्ठिर को क्षमा करनी होगी।"

इन शब्दों के साथ राजा विराट ने युधिष्ठिर को अपना राज्य, खजाना, तथा राजधानी समेत सौंप दिया और पुनः सभी पांडवों के साथ आलिंगन किया।

इसके बाद विराट ने युधिष्ठिर से कहा–"आप लोगों ने सकुशल वनवास तथा अज्ञातवास भी समाप्त किया। मेरा राज्य अर्जुन को समर्पित कर उनके साथ अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह करूँगा।"

राजा विराट के मुँह से ये शब्द सुनकर युधिष्ठिर ने अर्जुन की ओर देखा। तब अर्जुन ने विराट से यों कहा–"राजन्, मैं आपकी पुत्री को अपनी बहू बनाऊँगा।
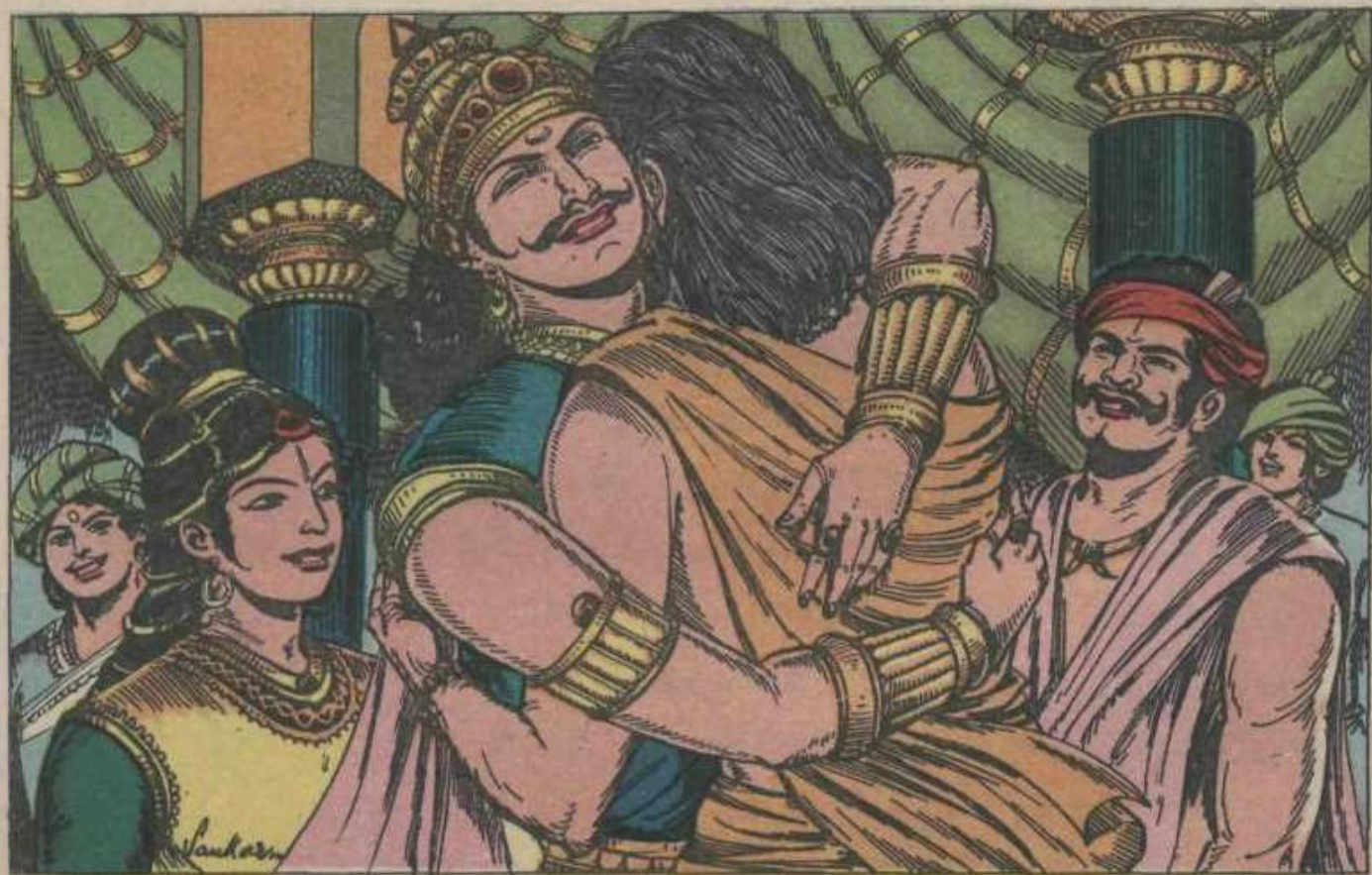
हमारे वंशों के बीच इस प्रकार का रिश्ता होना हितकारक है।"

"मेरी पुत्री को तुम्हें पत्नी के रूप में स्वीकार करने में कैसी आपत्ति है?" राजा विराट ने अर्जुन से पूछा।

"राजन्, मैं आपकी पुत्री के साथ एक वर्ष तक रहा। वह मुझे पिता के समान मानती है। अलावा इसके मैं उसके लिए नृत्याचार्य हूँ। मेरा पुत्र अभिमन्यु कृष्ण का भानजा है। छोटा भले ही हो, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता है। वह आपकी पुत्री के लिए योग्य वर है।" अर्जुन ने समझाया।

इस पर विराट ने प्रसन्न होकर कहा- "मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार करने के लिए तैयार हूँ। मेरे साथ तुम लोगों का रिश्ता शुभप्रद हो, यही मेरी कामना है।"

विवाह की तिथि का निर्णय युधिष्ठिर ने किया। तब विराट, अर्जुन इत्यादि ने कृष्ण के पास समाचार भेजा।

अज्ञातवास का वर्ष समाप्त होते ही पांडव विराट नगर को छोड़ मत्स्य देश के उपप्लाव्य नामक प्रदेश में जा बसे। वहाँ पर पांडवों के हितैषी अपनी सेनाओं के साथ आ पहुँचे। काशी राजा तथा शैब्य एक-एक अक्षौहिणी सेना को लेकर आये। इसके बाद राजा द्रुपद, द्रौपदी के पुत्र उप पांडव, शिखंडी, तथा धृष्टद्युम्न भी हर एक एक एक अक्षौहिणी सेना को लेकर आये। राजा विराट ने आगे बढ़ कर राजा द्रुपद का स्वागत किया और उनकी पूजा करके सादर लिवा लाया। इस प्रकार अनेक राजा उपप्लाव्य में आ पहुँचे।

द्वारका से अभिमन्यु को तथा इन्द्रसेन इत्यादि पांडवों के भृत्यों को साथ ले कृष्ण, बलराम, सात्यकी, अक्रूर, सांबु, कृतवर्मा, युयूध इत्यादि रथों में आ पहुँचे।

विराट के यहाँ शंख और भेरी बजने लगे। विराट ने पांडवों की पूजा की और अतिथियों के लिए अनेक जानवरों का माँस तैयार कराया, पीने के लिए गन्ने के रस से बनी शराब दी। नृत्य और संगीत का

आयोजन किया। सुधेष्णा के साथ अंत:पुर की सभी नारियों ने अलंकार करके वधू उत्तरा का श्रृंगार किया।

युधिष्ठिर तथा अर्जुन ने जब उत्तरा को अभिमन्यु की पत्नी के रूप में स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की, तब अर्जुन ने कृष्ण को साथ रख कर उत्तरा और अभिमन्यु का विवाह संपन्न कराया।

अभिमन्यु के विवाह के दूसरे दिन पांडव समस्त अतिथियों के साथ राजा विराट के सभा भवन में जमा हुए। सभा के मध्य भाग में राजा विराट, द्रुपद इत्यादि अधिक अवस्था के राजा बैठ गये। उस सभा में वसुदेव, सात्यकी, बलराम, कृष्ण, प्रद्युम्न, सांबु, अभिमन्यु, पांडव, उपपांडव, विराट के पुत्र इत्यादि उपस्थित थे, सभा की शोभा देखते ही बनती थी।

थोड़ी देर तक वार्तालाप होता रहा, तब कृष्ण ने सब को संबोधित कर यों कहा–"आप सब जानते हैं कि शकुनि ने जुएँ में युधिष्ठिर को धोखे से हराया और दुर्योधन ने भी धोखे से युधिष्ठिर का राज्य हड़प लिया। पांडव चाहे तो अपने बल और पराक्रम के द्वारा अपने राज्य को वापस पा सकते थे, मगर पांडवों ने अपने वचन के पालन के हेतु अत्यंत कष्टों से पूर्ण बारह वर्ष का वनवास किया। इससे भी भयंकर अज्ञातवास भी बिताया। इस प्रकार इन लोगों ने तेरह वर्ष कष्ट भोगे। एक वर्ष इन लोगों ने दासता में बिताया।
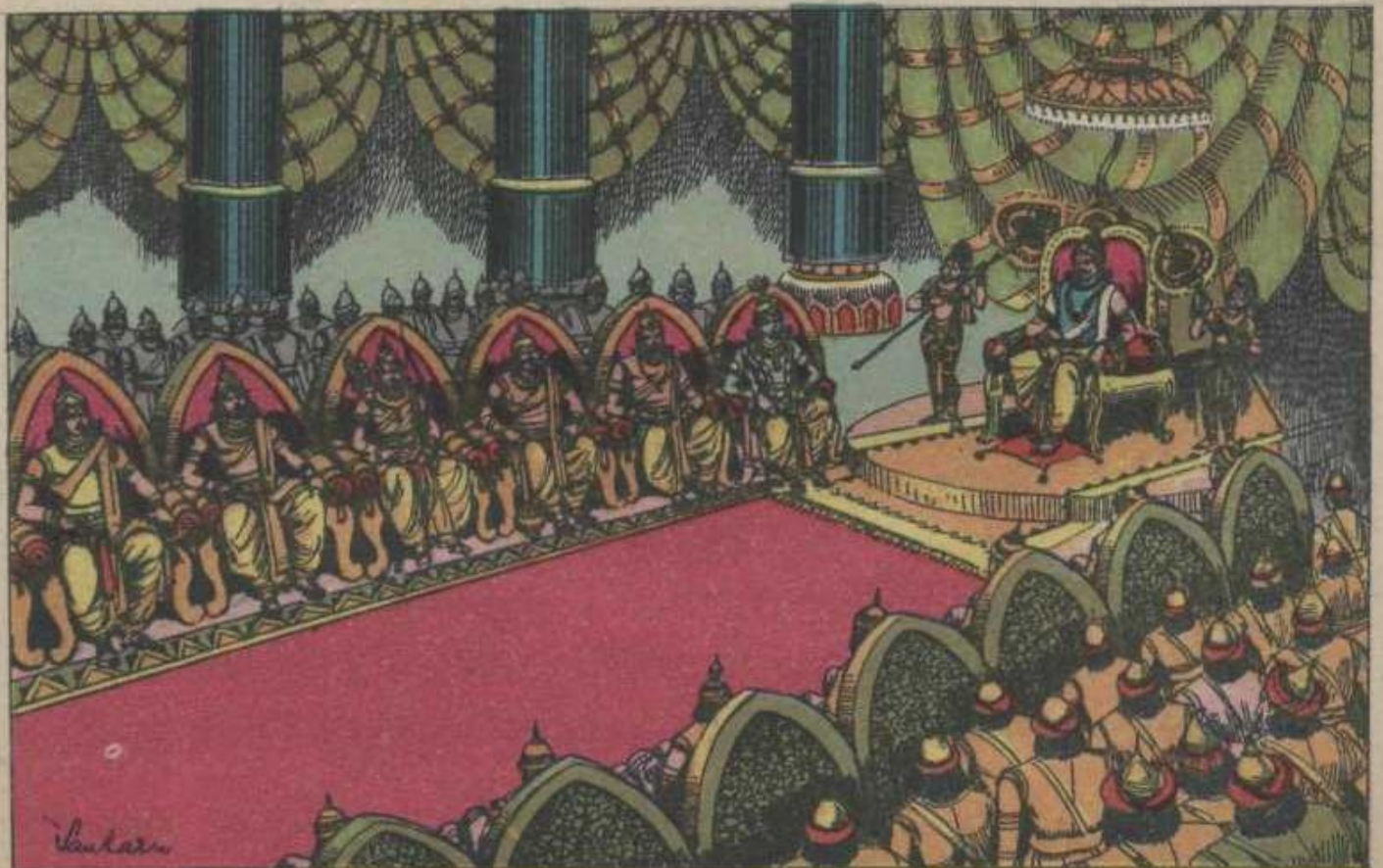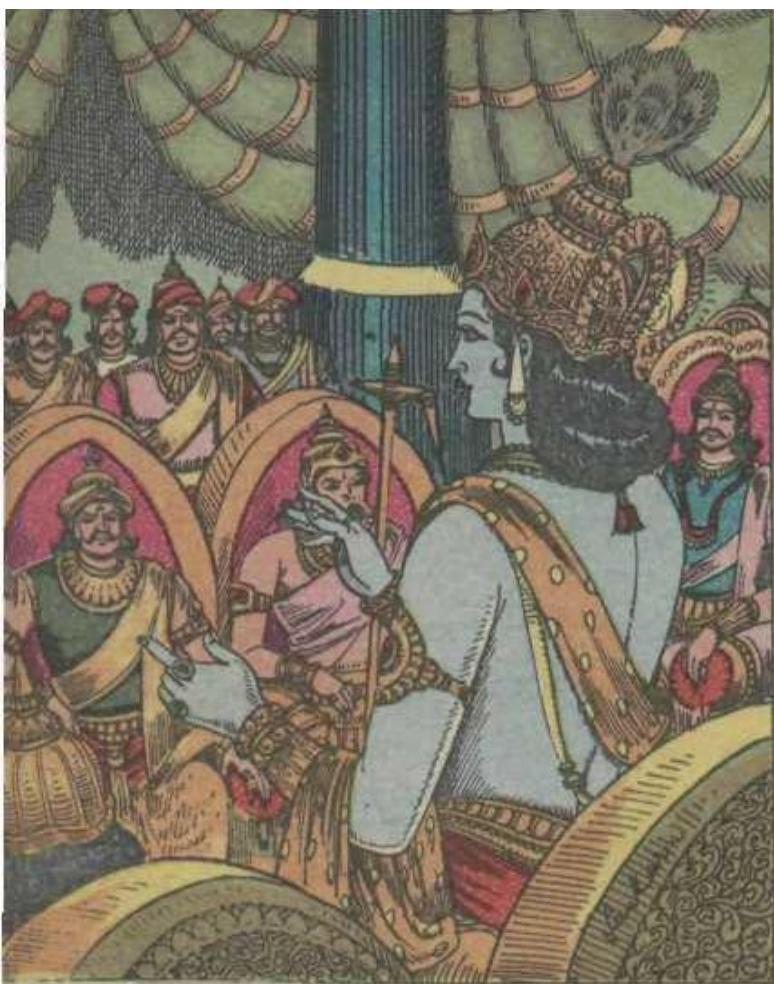
अब आप लोग निर्णय कीजिये कि इनका आगे का कार्यक्रम क्या होगा? वह निर्णय युधिष्ठिर तथा दुर्योधन के लिए भी मान्य हो और उसके द्वारा दोनों की प्रतिष्ठा बनी रहे तथा वह न्याय संगत भी हो। आप यह भी जानते हैं कि अन्यायपूर्वक स्वर्ग भी प्राप्त हो जाय, तो भी युधिष्ठिर स्वीकार नहीं करेंगे। न्यायपूर्वक एक छोटे से गाँव पर भी शासन करने को कहे तो ये स्वीकार करेंगे। ये सदा धृतराष्ट्र के पुत्रों का हित ही चाहेंगे। पांडव इस वक़्त वही राज्य चाहते हैं जिसे उन लोगों ने अपनी शक्ति के बल पर प्राप्त की थी। आप लोग निर्णय करते समय इस बात का ध्यान रखे कि दोनों पक्षों के लोग चचेरे भाई हैं, अतः दोनों की भलाई हो। दुर्योधन न्यायपूर्वक पांडवों का राज्य वापस करे तो अति उत्तम होगा। ऐसा न होकर फिर उन लोगों ने धोखा देने की कोशिश की तो पांडव धृतराष्ट्र के पुत्रों का संहार कर बैठेंगे। यह सोचना गलत होगा कि दुर्योधन ही बलवान है और पांडव दुर्बल हैं, पर हमें अभी तक दुर्योधन का विचार मालूम नहीं हो रहा है। इसे जाने बिना कोई निर्णय करना संभव नहीं है। इसलिए दुर्योधन का विचार जानने के लिए यहाँ से एक दक्ष तथा कुलीन दूत को भेजना उत्तम होगा। दूत जाकर दुर्योधन को उचित रूप में समझायेगा और पांडवों को आधा राज्य दिलाने में सफल होगा।"

इसके बाद बलराम ने कृष्ण के कथन का समर्थन करते हुए कहा-"यहाँ से जो दूत जायगा, उसे चाहिये कि वह भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोण, अश्वत्थामा, कृप, शकुनि, कर्ण तथा अन्य कौरव प्रमुखों से मिलकर उन्हें मधुर शब्दों के द्वारा संतुष्ट करे और कार्य साध कर लौटे। वास्तव में शकुनि के साथ जुआ खेलना युधिष्ठिर की गलती थी। शकुनि पांसे के खेल में अद्वितीय है। युधिष्ठिर उस सभा में और किसी के साथ भी जुआ खेलते तो अवश्य विजयी हुए होते।

मान ले कि जुआ खेला, तो आवेश में आकर अपना सर्वस्व उन्होंने दाँव पर रखा। इसमें शकुनि का धोखा ही कहाँ रहा? इसलिए मैं चाहता हूँ कि यहाँ से जो दूत जायेगा, उसे दुर्योधन का अनुग्रह प्राप्त करना चाहिये।"

बलराम की बातें सुनते ही सात्यकी को बड़ा क्रोध आया। वह झट उठ खड़ा हुआ और बलराम की निंदा करते हुए बोला– "आप ने अपनी अंतरात्मा के अनुरूप ही कहा, इसलिए मुझे आप पर क्रोध न आया। मगर आपके तथ्यहीन वचनों को सुनते इस सभा में चुप बैंठे रहनेवालों को देख मेरा क्रोध उबल रहा है। जुएँ में कच्चे युधिष्ठिर से वे लोग जबर्दस्ती जुआ खेलवायेंगे तो वह उनकी न्यायपूर्ण विजय कैसे हो सकती है? चाहे जो भी हो, जुएँ में हारने के कारण पांडवों ने वनवास तथा अज्ञातवास समाप्त करके अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया है। इस वक़्त युधिष्ठिर को अपना राज्य चाहने में कौरवों से याचना करने की क्या जरूरत है? यह बात मिथ्या है कि दुर्योधन आदि न्यायमार्ग का अनुसरण करेंगे। क्योंकि वे लोग किसी भी उपाय से सही पांडवों का राज्य हड़पने का षड्यंत्र कर रहे हैं। इसलिए युद्ध में उनकी मृत्यु निश्चित है। हम सब उनका अंत करके युधिष्ठिर का राज्याभिषेक
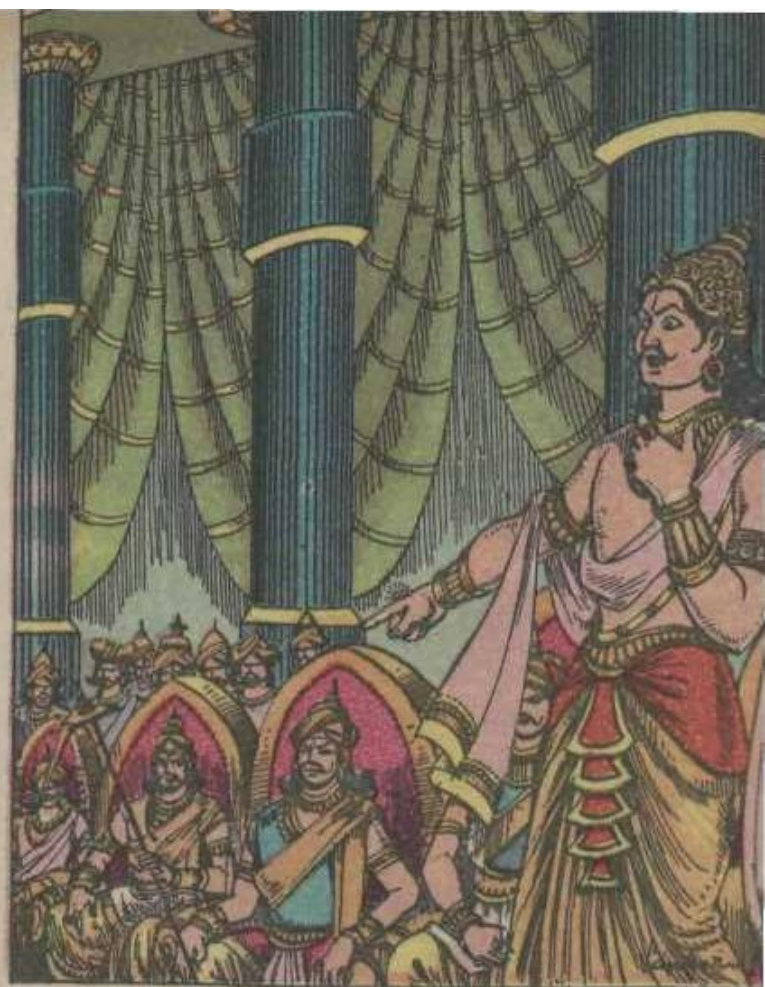
करेंगे। धृतराष्ट्र मेहर्बानी करके जो राज्य युधिष्ठिर को देना चाहेंगे, उसकी आवश्यकता युधिष्ठिर को नहीं है। इसलिए आप लोगों से मेरा नम्रनिवेदन है कि युधिष्ठिर का विचार जाने बिना कोई प्रयत्न न करें।"

इसके बाद द्रुपद ने अपने विचार प्रकट करते हुए यों कहा–"सात्यकी ने बड़ा अच्छा कहा। यह सत्य है कि मीठी बातों से पिघल कर दुर्योधन राज्य न देगा। धृतराष्ट्र अपने पुत्र पर नियंत्रण रखने की शक्ति नहीं रखते। भीष्म और द्रोण दुर्योधन के समर्थन करने की स्थिति में हैं। कर्ण और शकुनि मूर्ख बनकर दुर्योधन का

समर्थन करनेवाले हैं। इसलिए मेरा विश्वास है कि हम जिस दूत को कौरवों के पास भेज रहे हैं, वह दुर्योधन को मीठी बातों द्वारा प्रसन्न नहीं कर सकता। हित की बातें बताना दुर्योधन की दृष्टि में दुर्बलता ही मानी जायगी। इसलिए हमें जो प्रयत्न करना चाहिए, उसमें किसी प्रकार की शिथिलता आने नहीं देना चाहिये। तुरंत शल्य, धृष्टकेतु, जयत्सेन, कैकेयों तथा अन्य राजाओं को अपनी अपनी सेनाओं के साथ उपस्थित होने के लिए खबर भेजनी होगी। दुर्योधन भी यही काम करेगा। जो पहले अन्य राजाओं से सहायता माँगेंगे, उन्हें ही उनकी सहायता प्राप्त होगी। इसलिए यथाशीघ्र सेनाओं का संग्रह करने का प्रयत्न कीजिये। यह कार्य अत्यंत उत्तरदायित्वपूर्ण है। हमें तो अनेक राजाओं के पास समाचार भेजने हैं। ये मेरे पुरोहित हैं, वृद्ध हैं, धर्मशास्त्र के ज्ञाता हैं, इसलिए इन्हें सारी बातें समझा कर धृतराष्ट्र की सभा में भेज दीजिये।"

अंत में कृष्ण ने कहा–"द्रुपद ने जो कुछ कहा, ठीक कहा। इनके कहे अनुसार चलने से पांडवों का हित होगा। पर अपने प्रयत्न में राजनीति का उपयोग करना होगा। दोनों पक्षों के लोग सुखी रहे तो हमें इससे बढ़ कर और चाहिये ही क्या? हम सब यहाँ पर विवाह में भाग लेने आये हैं। विवाह ठाठ से संपन्न हो गया है। अब हम सब अपने अपने नगरों को लौट सकते हैं। द्रुपद वृद्ध हैं और हम सबके लिए पूज्य हैं। धृतराष्ट्र के पास इनके द्वारा संदेशा भेज दें तो वहाँ के भीष्म, द्रोण इत्यादि उनका आदर करेंगे। उनका निर्णय हम सब के लिए शिरोधार्य होगा। यदि दुर्योधन ने हमारे संदेश की उपेक्षा की तो आप लोग जैसे अन्य राजाओं के पास समाचार भेजेंगे, वैसे मेरे पास भी समाचार भेजिये।"

इसके बाद कृष्ण अपने नगर को लौटने की तैयारी करने लगे, तब राजा विराट ने उन्हें अपार धन, संपत्ति, वस्त्र तथा वाहन उपहार के रूप में दे विदा किया।

शिवपुराण

[२०]

प्राचीन काल में अयोध्या नगर पर बाहु नामक राजा शासन करता था। हैहेयवंशी राजा ने अयोध्या पर हमला करके राजा बाहु को वहाँ से भगा दिया, इस पर बाहु अपनी पत्नियों के साथ जंगलों में भाग गया।

जंगल में रहते समय बाहु की पत्नियों में से एक गर्भवती हुई। इस बीच राजा बाहु का देहांत हो गया। इस पर राजा की गर्भवती पत्नी अपने पति के साथ सहगमन करने को तैयार हो गयी, मगर और्व नामक मुनि ने उसे रोका और बताया कि उसके एक पुत्र होनेवाला है।

यह बात जानकर उस गर्भवती की सौतों ने उसे ज़हर दिया, मगर उस विष के साथ उस औरत के एक बच्चा हुआ। इसलिए उस बच्चे का नाम सगर (विष के साथ मिला हुआ) पड़ा। सगर कालांतर में एक बड़ा चक्रवर्ती बना और मुनि और्व की मदद से उसने अनेक अश्वमेधयज्ञ भी किये।

सगर के सुमती तथा केशिनी नामक दो पत्नियाँ थीं। लेकिन उसके कोई संतान न थी। इसलिए वह नगर को छोड़ जंगल में जाकर मुनि और्व से मिला।

और्व ने समझाया कि सगर की पत्नियों के संतान होगी, लेकिन उसे अपनी पत्नियों के साथ कैलास में जाकर तपस्या करनी होगी। सगर ने कैलास जाकर शिवजी के प्रति तपस्या की। शिवजी ने सगर को संतान-प्राप्ति का वरदान दिया।

सगर के नगर में लौटने पर उसकी दोनों पत्नियाँ गर्भवती हुईं और दोनों ने

अंतिम पृष्ठ का चित्र

दो पुत्रों का जन्म दिया। रानी केशिनी के असमंजस नामक एक लड़का हुआ। मुनि और्व ने आकर बताया कि सुमती के जो पुत्र हुआ है, उसमें साठ हज़ार पुत्र हैं, तब उस बच्चे के साठ हज़ार टुकड़े करवाकर मिट्टी के बर्तनों में उन टुकड़ों को रखवाया। उन बर्तनों में से साठ हज़ार पुत्र पैदा हुए।

केशिनी का पुत्र असमंजस महान भयंकर कार्य किया करता था। वह छोटे व बड़े सबको नदी में फेंक देता था। उसके इन दुष्ट कार्यों से तंग आकर जनता ने सगर से शिकायत की। सगर ने असमंजस को राजधानी से निकलवा दिया। इसके बाद सगर ने पुनः अश्वमेधयज्ञ करने का निश्चय किया। यज्ञ के अश्व को छोड़ उसके पीछे अपने साठ हज़ार पुत्रों को भेज दिया।

सगर ने जिस अश्व को छोड़ था, वह एक स्थान पर घूमते अचानक गायब हो गया। सगर के पुत्र उसकी खोज करते थक गये और लौटकर अपने पिता से कहा कि यज्ञ का अश्व गायब हो गया है। इस पर नाराज़ हो, सगर ने अपने पुत्रों को आदेश दिया कि बिना अश्व के लाये तुम लोग राजधानी में प्रवेश नहीं कर सकते।

सगर के पुत्र फिर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ वह अश्व गायब हो गया था। वहाँ पर उन लोगों ने ज़मीन खोदना शुरू किया। पाताल तक खोदने पर उन्हें वहाँ पर तपस्या करनेवाले महर्षि कपिल दिखाई दिये। उनके पास ही यज्ञ का अश्व खड़ा था।

सगर के पुत्रों ने सोचा कि इसी मुनि ने अश्व को चुराया है। जब उन्हें पकड़ने को आगे बढ़े तब कपिलमुनि ने आँखें खोलकर देखा, फिर क्या था, साठ हज़ार सगर पुत्र साठ हज़ार राख के ढेर बन गये। यह समाचार नारद के द्वारा राजा सगर को मिला। इस पर उसने उस अश्व को लाने के लिए असमंजस के पुत्र अंशुमान को भेजा।

अंशुमान कपिलमुनि के पास पहुँचा और अश्व की माँग किये बिना कपिल को प्रणाम करते खड़ा रह गया। कपिल ने अंशुमान को देख प्रसन्न होकर कहा-" वत्स, तुम अश्व को ले जाओ और अपने दादा से कह दो कि ये सब यहाँ पर भस्म बने हुए हैं।"

" महात्मन, मेरे मृत पिताओं की स्वर्ग-प्राप्ति का कोई उपाय हो तो बताइये।" अंशुमान ने कपिल से विनती की।

" इन लोगों के अनेक जन्मधारण करने पर भी इनका पाप मिट न जायगा, लेकिन तुम्हारे पोते के द्वारा इन्हें मुक्ति मिलेगी।" कपिलमुनि ने अंशुमान को समझाया।

इसके बाद अंशुमान ने यज्ञ का अश्व लाकर सगर को सौंप दिया। सगर ने अश्वमेधयज्ञ समाप्त करके अंशुमान को सिंहासन पर बिठाया।

राजा बनने के बाद भी अंशुमान अपने पिताओं की मुक्ति के बारे में चिंतित था। एक बार गरुड़ ने उसे बताया-" यदि तुम गंगाजी को लाकर अपने पिताओं के भस्म पर बहा दोगे तो उन्हें मुक्ति मिलेगी।"

गंगाजी को पृथ्वी पर अवतरित करने के लिए अंशुमान ने अपने पुत्र दिलीप को राजपाट सौंप दिया और स्वयं जंगलों में जाकर तपस्या करने लगा। मगर उस तपस्या के पूरा होने के पहले ही वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।

इसके बाद दिलीप के पुत्र भगीरथ ने अपने दादाओं की दुस्थिति का समाचार

सुना तो उसके मन में उनके उद्धार का विचार आया और उसने ब्रह्मा के प्रति घोर तपस्या की।

ब्रह्मा ने प्रत्यक्ष होकर भगीरथ को वर दिया कि वह धर्म का पालन करते हुए स्वेच्छापूर्वक जीवन-यापन कर सकता है।

तब भगीरथ ने गंगाजी के प्रति दीर्घकाल तक तपस्या की। गंगादेवी ने दर्शन देकर उसकी कामना जान ली और कहा–"मैं स्वर्ग से जब पृथ्वी पर गिर जाऊँगी तब मेरे वेग को कौन रोक सकता है? मैं पृथ्वी को फोड़कर सीधे पाताल में उतर जाऊँगी।"

इस पर भगीरथ ने उत्तर दिया–"हे माते! सारे विश्व को अपने में समाये हुए शिवजी आपको धारण कर सकते हैं।"

"यदि मैं पृथ्वी पर आ जाऊँगी तो सभी पापी अपने पापों को मुझ में धो लेंगे। मैं उन पापों से कैसे मुक्त हो सकती हूँ?" गंगाजी ने फिर पूछा।

"देवी! समस्त पापों को हरनेवाले हरि को अपने में अवस्थित करनेवाले पुण्यात्माओं के स्नान करने पर आप में मिलनेवाले समस्त पाप धुल जायेंगे।" भगीरथ ने उत्तर दिया।

"अच्छी बात है! तुम शिवजी को मनवा लो कि वे मुझे धारण करे।" ये शब्द कहकर गंगाजी अंतर्धान हो गयीं।

इसके उपरांत भगीरथ ने शिवजी के प्रति तपस्या की और उन्हें प्रत्यक्ष करके अपनी कामना बता दी। गंगाजी को धारण करने के लिए शिवजी ने मान लिया।

फिर क्या था, आसमान से गंगाजी सीधे शिवजी के सर पर गिरी। इस के बाद शिवजी की जटाओं से फिसल कर पृथ्वी पर प्रवहित होने लगी। भगीरथ वायुवेग वाले रथ पर आगे बढ़ा जा रहा था, तो गंगाजी उसके पिछे चल पड़ीं। क्रमशः सगर के पुत्रों के भस्मों के ढेरों पर प्रवहित होकर समुद्र बन गयी। इसलिए समुद्र का नाम सागर पड़ गया।

१३०. दो हजार वर्ष पूर्व की नहर

चीन में ई. पू. २५० में बनकर समाप्त हुई यह नहर ८ लाख एकड़ से अधिक जमीन को उपजाऊ बनाने में काम दे रही है। इसकी खुदाई का प्रारंभ ई. पू. छठी शताब्दी में हुआ था। इसकी लंबाई १२०० मील है। यह नहर पीकिंग से होंगचो तक फैली हुई है। इसका निर्माण मिट्टी, पत्थर और लकड़ी से हुआ है।

Photo by Jadhav

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

महाभारत के लिपिक !

प्रेषक :
सुशील कुमार अग्रवाल,

Photo by Jadhva
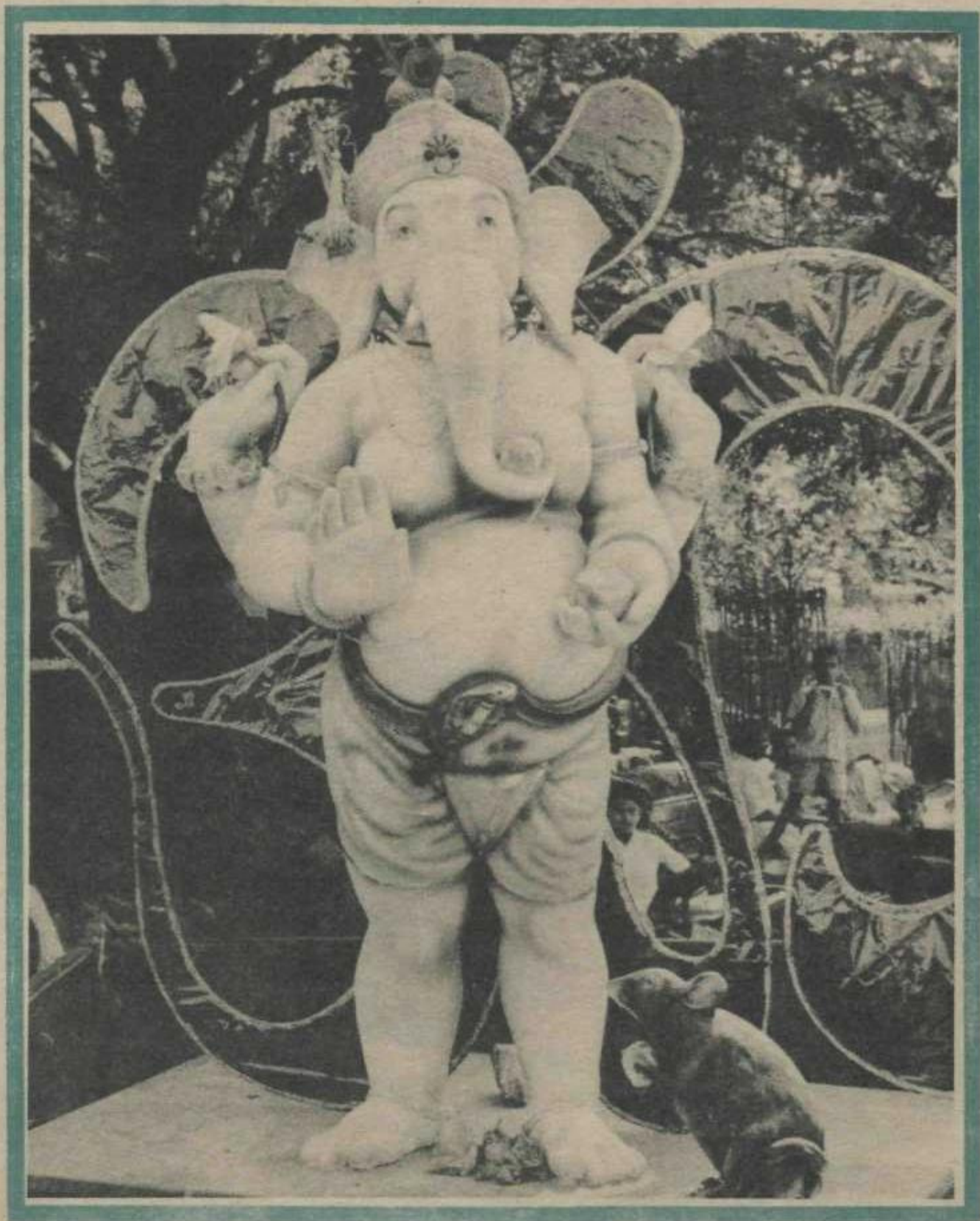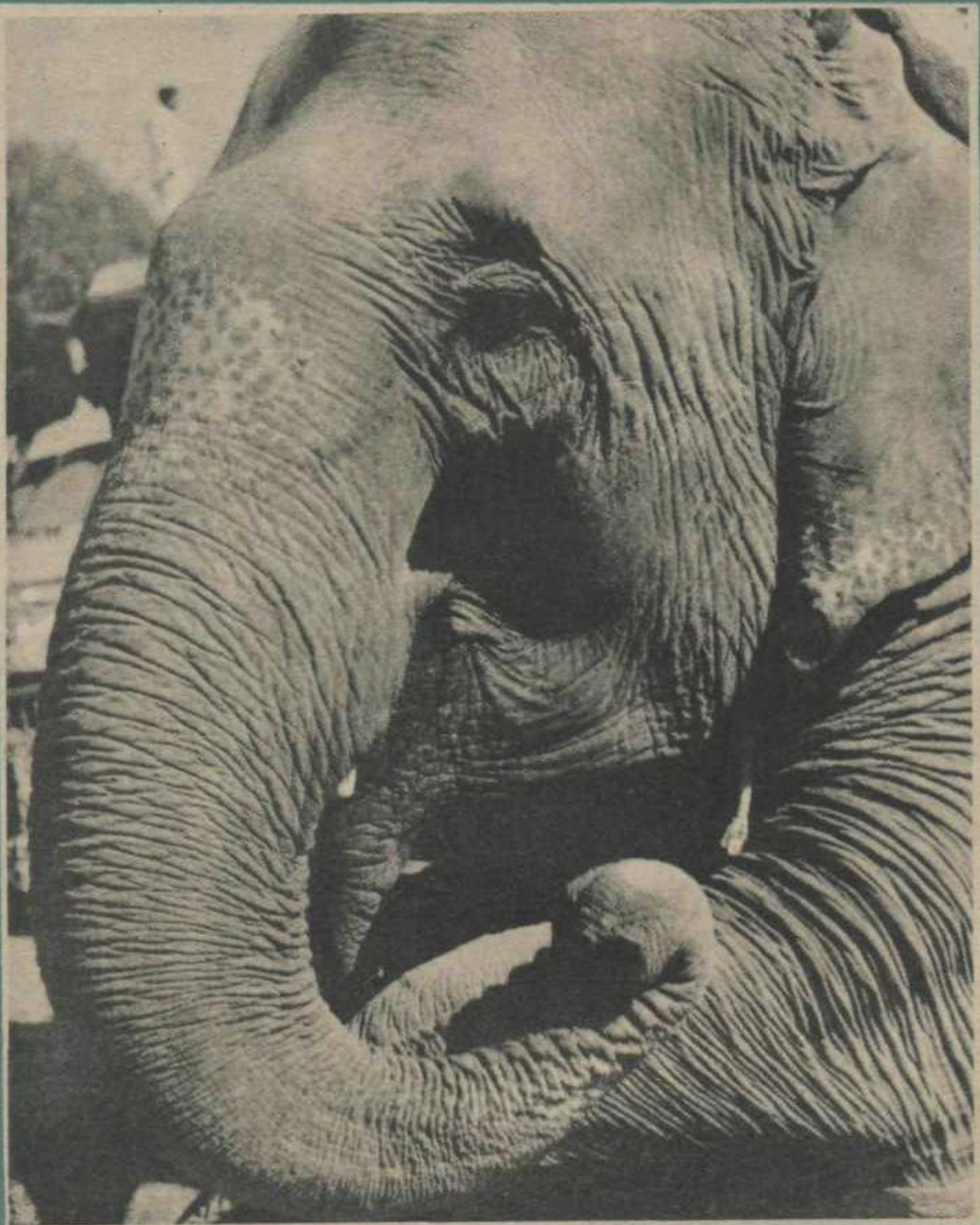
नया टोला,
पटना-४

महाराजा के वाहक !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★ परिचयोक्तियाँ नवम्बर ५ तक प्राप्त होनी चाहिए ।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जनवरी के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा मुखपृष्ठ :
भगवान का जुलूस

तीसरा मुखपृष्ठ :
दुलहिन की विदाई

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

अब लीजिये, NP क्राकीज़!
इन नये, निराले, दिलकश स्वादों में आरेंज, मेंथाल, टूटी फ्रूटी
NP
ORANGE
CRACKIES
CHEWING GUM
TUTTI FRUTTI
CRACKIES
MENTHOL
CRACKIES
CHEWING GUM
जी हाँ, बढ़िया से बढ़िया च्यूइंग गम सचमुच लाजवाब! मुँह ताजा रखनेवाला मनभाता स्वाद। आज खाइए, फिर हमेशा खाते रहेंगे।
दि नेशनल प्रॉडक्ट्स,
बेंगलोर-६

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

हर घर में सबकी मनपसन्द
लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट चाय
बेशक उम्दा चाय
ठीक आपके मन मुताबिक
लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट—
ज़ोरदार लिकर और बढ़िया खुशबू से दिल खुश
हो जायेगा। लिपटन की हिमालयन गोल्डन
डस्ट—पीकर संतोष, पिलाकर संतोष।
घर में लाइये। घर के लोग भी
खुश, मेहमान भी खुश।
LIPTON'S
GOLDEN DUST TEA

चिकलेट्स मज़ेदार चूइंग गम
ADAMS
LEMON
Chiclets
12 PIECES
ORANGE
Chiclets
12 PIECES
Chiclets
12 PIECES
Chiclets
12 PIECES
बच्चों देखो नया कमाल
चिकलेट के
जोकर की चाल
सधा एक पर चिकलेट एक
चार ज़ायका
मज़ा अनेक
नाचो, गाओ, मचाओ शोर
मुझको और, मुझको और।"
Chiclets
लेमन
ऑरेंज
पेपरमिंट
टूटी-फ्रूटी

Photo by: BRAHM-DEV